नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 386, नई दिल्ली, गुरुवार 26 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

● 03 सड़कों पर दिल्ली सरकार का 'फोकस', अगले साल 600 किमी सड़कें बनेंगी...
● 06 कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में रहना
● 08 नन्हें शेर शावक नवरात्र में बिरसा जैविक उद्यान राँची पहुंचा

देशभर के विशेषज्ञ एक मंच पर — "परिवहन विशेष कॉन्क्लेव 2026" बनेगा विचारों का महासंगम

जलवायु, ट्रैफिक, साइबर क्राइम और महिला सुरक्षा पर होगा मंथन, देशभर के विशेषज्ञ एक मंच पर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली | देश के प्रतिष्ठित परिवहन एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़े मंच परिवहन विशेष द्वारा आयोजित 3rd Parivahan Vishesh Conclave & Excellence Award Ceremony 2026 का भव्य एवं गरिमामय आयोजन आगामी 29 मार्च 2026 (रविवार) को दोपहर 1:00 बजे से नई दिल्ली स्थित मावलांकर हॉल, कॉन्स्टीट्यूशनल क्लब में संपन्न होगा। यह आयोजन देशभर के विशेषज्ञों, नीति-निर्माताओं, समाजसेवियों एवं प्रबुद्ध नागरिकों का एक महत्वपूर्ण संगम सिद्ध होगा।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री जस्टिस राजेश टंडन (पूर्व न्यायाधीश, उत्तराखंड उच्च न्यायालय) अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। वे अपने संबोधन में न्यायिक दृष्टिकोण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा परिवहन व्यवस्था से जुड़े समसामयिक विषयों पर अपने विचार साझा करेंगे, जो उपस्थित जनसमूह के लिए अत्यंत प्रेरणादायक होंगे।

इस अवसर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों—जैसे चिकित्सा, शिक्षा, प्रशासन, सुरक्षा, सामाजिक सेवा एवं आध्यात्मिक क्षेत्र—से जुड़े प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों को Guest of Honour के रूप में आमंत्रित किया जाएगा। इन विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति कार्यक्रम की गरिमा को और अधिक ऊँचाइयों तक पहुंचाएगी।

यह कॉन्क्लेव समकालीन चुनौतियों एवं सामाजिक सरोकारों पर केंद्रित रहेगा। विशेष रूप से

- **जलवायु परिवर्तन एवं प्रदूषण**
- **सड़क दुर्घटनाएं एवं ट्रैफिक जाम**
- **साइबर क्राइम**
- **महिला सुरक्षा**

जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा गहन विचार-विमर्श किया जाएगा। विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवी वक्ता अपने अनुभव, सुझाव एवं शोध आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए इन समस्याओं के समाधान हेतु ठोस एवं व्यावहारिक उपायों पर प्रकाश डालेंगे।

कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण Excellence Award Ceremony होगा, जिसमें समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों, संस्थानों एवं संगठनों को सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान उन लोगों के प्रयासों को पहचान देने का एक सार्थक प्रयास होगा, जिन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कार्यक्रम स्थल को विशेष रूप से आकर्षक एवं भव्य रूप से सजाया जाएगा। पुष्प सज्जा, सुसज्जित मंच, आधुनिक प्रकाश व्यवस्था एवं सुव्यवस्थित बैठने की व्यवस्था कार्यक्रम को एक गरिमामय वातावरण प्रदान करेगी। बड़ी संख्या में उपस्थित दर्शक, गणमान्य अतिथि एवं मीडिया प्रतिनिधि इस आयोजन के साक्षी बनेंगे।

आयोजकों के अनुसार, यह कॉन्क्लेव केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान, जागरूकता बढ़ाने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह मंच विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को एक साथ लाकर संवाद, सहयोग और समाधान की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करेगा।

कार्यक्रम के अंत में आयोजक सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करेंगे तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के प्रभावशाली आयोजनों के माध्यम से समाज एवं राष्ट्रहित में योगदान देने का संकल्प दोहराया जाएगा।

दुर्गाष्टमी व श्रीराम नवमी आज

शास्त्रों के अनुसार, नवरात्रि के अंतिम दो दिन अष्टमी और नवमी तिथि पर विशेष रूप से कन्या पूजन किया जाता है, जिसे देवी की साक्षात उपासना का रूप माना गया है। मान्यता है कि, छोटी कन्याओं में मां दुर्गा का वास होता है, इसलिए उनका पूजन कर भक्त अपने व्रत को पूर्णता प्रदान करते हैं और देवी की कृपा प्राप्त करते हैं। हालांकि, कई बार तिथियों के एक ही दिन होने पर अष्टमी-नवमी को लेकर असमंजस बना रहता है।

वैदिक पंचांग के अनुसार चैत्र माह के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि 26 मार्च को सुबह 11 बजकर 46 मिनट पर शुरू होगी और 27 मार्च को सुबह 10 बजकर 7 मिनट पर समाप्त होगी। हिंदू धर्म में कोई भी पर्व उदयातिथि के अनुसार मनाया जाता है। लेकिन कहते हैं कि भगवान श्रीराम को जन्म मध्याह्न काल में हुआ था और इसलिए रामनवमी 26 मार्च 2026 को मनाई जाएगी. हालांकि, वैष्णव संप्रदाय के लोग राम नवमी 27 मार्च को मनाएंगे।

इस बार चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि की शुरुआत 25 मार्च 2026 को दोपहर 1 बजकर 50 मिनट पर हो रही है। इस तिथि का समापन 26 मार्च को सुबह 11 बजकर 48 मिनट पर माना जा रहा है। उदया तिथि के अनुसार, चैत्र नवरात्रि में 26 मार्च 2026, गुरुवार को अष्टमी होगी और कन्या पूजन किया जाएगा।

दुर्गा अष्टमी का महत्व :- दुर्गा अष्टमी, जिसे महाअष्टमी के नाम से भी जाना जाता है, देवी दुर्गा के उग्र और शक्तिशाली स्वरूप को समर्पित एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिन है। इस दिन श्रद्धालु मां दुर्गा की विशेष पूजा-अर्चना कर उनसे शक्ति, साहस और रक्षा का आशीर्वाद मांगते हैं। कई भक्त इस अवसर पर विधिपूर्वक व्रत रखते हैं और घरों तथा मंदिरों में भव्य पूजा का आयोजन करते हैं। अष्टमी तिथि पर 'कन्या पूजन' का विशेष महत्व होता है, जिसमें छोटी कन्याओं को देवी का स्वरूप मानकर उनका सम्मान किया जाता है और उन्हें प्रसाद अर्पित किया जाता है।

रामनवमी का महत्व :- नवरात्रि का नौवां दिन रामनवमी के रूप में मनाया जाता है, जो भगवान श्रीराम के पावन जन्मोत्सव का प्रतीक है। यह दिन विशेष रूप से भगवान विष्णु के भक्तों के लिए अत्यंत श्रद्धा और आस्था से भरा होता है। इस अवसर पर मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना की जाती है, रामायण का पाठ होता है, भजन-कीर्तन और भव्य शोभायात्राएं निकाली जाती हैं। भक्तजन पूरे दिन भक्ति में लीन रहकर प्रभु श्रीराम के आदर्शों को स्मरण करते हैं। कई श्रद्धालु इसी दिन अपने नवरात्रि व्रत का विधिपूर्वक समापन करते हैं और प्रसाद ग्रहण कर उत्सव मनाते हैं। यह पर्व धर्म, मर्यादा और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

अष्टमी और नवमी के प्रमुख अनुष्ठान :- देशभर में इन दोनों दिनों पर विभिन्न परंपराएं निभाई जाती हैं, हालांकि कुछ प्रमुख अनुष्ठान लगभग हर जगह समान रूप से किए जाते हैं। जैसे - 9 छोटी कन्याओं की पूजा कर उन्हें भोजन और उपहार दिए जाते हैं। कई लोग अष्टमी या नवमी तक उपवास रखते हैं। घरों और मंदिरों में शुद्धिकरण और सकारात्मक ऊर्जा के लिए हवन किया जाता है। पूड़ी, चना और हलवा जैसे व्यंजन बनाकर देवी को अर्पित किए जाते हैं।

प्रभु श्रीराम : जन-जन के आराध्य, राजनीति के महानायक

प्रदीप कुमार वर्मा

सूर्यवंश के प्रतापी राजा अयोध्या नरेश राम। शबरी की भक्ति के प्रतिफल राम। जन-जन के आराध्य राम। राजा दशरथ के आज्ञाकारी पुत्र राम। और प्राचीन भारतीय राजतंत्र से लेकर वर्तमान में लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीति के महानायक। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति राम के बिना अधूरी है। त्रेता युग में प्रभु श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन हमारी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा। जो समस्त राष्ट्र और विश्व को आलोकित करता था और आज भी कर रहा है। भगवान राम के प्रति जन आस्था का आलम ऐसा है कि बीते दिनों में भगवान राम लोगों की आस्था से लेकर देश की राजनीतिक केंद्र बन गए हैं। यही वजह है कि बीते कई दशकों से भगवान श्रीराम विभिन्न राजनीतिक दलों के लिए अलग-अलग विमर्श हैं। और यह दुर्भाग्य कहा जाएगा कि भगवान राम के देश में राम राजनीति में किसी दल के लिए सत्ता के 'संबल' है, तो किसी के लिए "अछूत"।

प्राचीन भारतीय हिन्दु धर्म शास्त्रों के अनुसार त्रेतायुग में भगवान विष्णु ने पृथ्वी पर श्रीराम के रूप में अवतार लिया था। रावण के अत्याचारों को समाप्त करने तथा धर्म की पुनःस्थापना के लिये श्री रामचन्द्र भगवान का जन्म चैत्र शुक्ल की नवमी के दिन पुनर्वसु नक्षत्रतथा कर्क लग्न में राजा दशरथ के घर में हुआ था। हिन्दू धर्म में रामनवमी के दिन मर्यादा के प्रतीक भगवान श्री राम की पूजा अर्चना की जाती है। रामनवमी का सनातन धर्म में विशेष धार्मिक और पारंपरिक महत्व है जो हिंदू धर्म के लोगों के द्वारा पूरी भक्ति, आस्था एवं उत्साह के साथ मनाया जाता है। भगवान विष्णु के अवतार श्रीराम का धरती पर अवतार लेने का एकमात्र उद्देश्य अधर्म का नाश कर धर्म की पुनः स्थापना करना था। जिससे सामान्य मानव शांति, प्रेम एवं सुख के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सके, साथ ही भगवान की भक्ति भी हो सके। इसके साथ ही राम राज्य की 'संकल्पना' भी त्रेता युग की ही देन है, जो वर्तमान की भी आवश्यकता है।

देश और दुनिया में तीर्थ नगरी के रूप में चर्चित अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के बाद से जन-जन के आराध्य भगवान श्री राम भारतीय राजनीति के केंद्र में हैं। केंद्र की सत्ता पर काबिज भाजपा 'रामराज्य' और विकसित भारत 2047 के एजेंडे को लेकर आगे बढ़ रही है। इसके उलट कांग्रेस सहित समूचा विपक्ष इसे भाजपा का 'चुनावी नैरेटिव' बता रहा है। राष्ट्रपति मुर्मू की हालिया अयोध्या यात्रा में राम के प्रति देश की प्रथम नागरिक के समर्पण और श्रद्धा ने इस धार्मिक-राजनीतिक बहस को और तेज कर दिया है। श्रीमती मुर्मु ने राम जन्मभूमि मंदिर में आरती की तथा श्री राम यंत्र स्थापना समारोह में भाग लिया। वैदिक मंत्रों के बीच राम मंदिर की दूसरी मंजिल पर श्री राम यंत्र स्थापित किया गया। इस मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि देश सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मोर्चे पर पुनर्जागरण के दौर से गुजर रहा है और अयोध्या स्थित श्री राम जन्मभूमि मंदिर इसका प्रतीक है।

भारतीय राजनीति में भगवान श्री राम की प्रासंगिकता पर गौर करें, तो पता चलता है की राम मंदिर आंदोलन को लेकर विभिन्न प्रयासों से इसकी शुरुआत मानी जा सकती है। भाजपा ने जब राम मंदिर निर्माण के लिए पूरे देश में एक भव्य रथ यात्रा निकाली तो यात्रा के समर्थन में लोगों का सैलाब उमड़ पाड़ा और पूरा देश 'राम भक्त' और 'राम विरोधी' खेमों में बंट गया। भगवान श्री राम की जन्म भूमि अयोध्या ने एक वह दौर भी देखा जब अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए कारसेवा कर रहे कर सेवकों के लहू से सरयू का पानी लाल हो गया था। भगवान श्री राम की भारतीय राजनीति में प्रासंगिकता पर एक मोड उस समय भी आया जब डेढ़ सौ साल पुरानी पार्टी कहीं जाने वाली कांग्रेस ने अदालत में यह 'हलफनामा' दिया कि भगवान श्री राम हुए ही नहीं और राम एक 'काल्पनिक' पात्र भर है। बदलते वक्त के साथ देश में वह दौर भी आया जब केंद्र की कुर्सी पर भाजपा की अगुवाई वाली एनडीए सरकार बैठी। इसके बाद शुरू हुए राम मंदिर निर्माण के वैधानिक प्रयास।

केंद्र सरकार के निर्देश पर सुप्रीम कोर्ट में राम मंदिर मामले की सुनवाई लगातार हुई और वह दिन भी आया जब केंद्र सरकार ने राम मंदिर के पक्ष में अपना फैसला दिया। इस फैसले ने सालों की देरी से सही पर अयोध्या में भगवान श्री राम की जन्म भूमि पर भव्य राम मंदिर बनाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। देश की सबसे बड़ी अदालत के निर्देश पर अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हुआ और भाजपा ने राम मंदिर बनाने के संबंध में अपने घोषणा पत्र में जो संकल्प लिया था, उसको पूरा करके दिखा दिया। इसके बाद केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार ने 'डबल इंजन' की गति से अयोध्या के विकास को पटरी पर लाकर तेज गति प्रदान की। यही वजह है कि आज अयोध्या एक प्रभावी और जन आस्था से जुड़े धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विश्व के मानचित्र पर उभर रहा है। विभिन्न एजेंसियों से जुड़े आंकड़े बताते हैं कि अयोध्या में प्रभु श्रीराम के मंदिर का 'दर्शन' करने वाले लोगों की संख्या विश्व विख्यात 'ताजमहल' जैसे पर्यटन स्थलों की तुलना में कई गुना ज्यादा रही है।

भारतीय राजनीति में 'शासक' से जो अपेक्षा की गई है वह त्रेता युग में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के शासन राम राज्य से प्रेरित जान पड़ती है। भगवान राम ने राजनीतिक एवं सामाजिक कर्तव्यों के लिहाज से कई आदर्श स्थापित किए। प्रभु श्रीराम ने मर्यादा के पालन के लिए राज्य, मित्र, माता-पिता, यहां तक कि पत्नी का भी साथ छोड़ा। प्रभु श्रीराम का परिवार एक आदर्श भारतीय परिवार का प्रतिनिधित्व करता है और संयुक्त परिवार का एक जीवंत उदाहरण भी है। प्रभु श्री राम द्वारा सामाजिक पारिवारिक एवं राजनीतिक कर्तव्यों तथा मर्यादाओं का पालन करने के कारण ही उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता जाता है। समय के साथ बदलते युग एवं व्यवस्था को भले ही सैकड़ो वर्ष बीत गए हो, लेकिन भारतीय जनमानस में प्रभु श्रीराम आज भी जीवंत हैं और आज के दौर में राजनीति के शिखर पुरुष भी हैं।

राम नवमी 2026: विशेष मर्यादा, आस्था और आदर्श जीवन का संदेश

सौरभ वार्ष्णेय

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी। हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥ यह चौपाई सुनते ही मन भी राममय हो जाता है। भारत की सांस्कृतिक परंपरा में त्योहार केवल उत्सव नहीं होते, बल्कि वे जीवन जीने की दिशा भी देते हैं। ऐसा ही एक पावन पर्व है राम नवमी, जो भगवान राम के जन्मोत्सव के रूप में पूरे देश में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

वर्ष 2026 में भी यह पर्व लोगों के जीवन में आस्था, संयम और आदर्शों की नई ऊर्जा लेकर आएगा। राम नवमी चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाई जाती है। यह वही दिन है जब अयोध्या में राजा दशरथ के घर भगवान राम का जन्म हुआ था। राम केवल एक देवता ही नहीं, बल्कि आदर्श पुत्र, आदर्श राजा और आदर्श मानव के रूप में भी पूजे जाते हैं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी धर्म और सत्य का मार्ग नहीं छोडऩा चाहिए। आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य में राम के आदर्श और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। जब समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास दिखाई देता है, तब राम का जीवन हमें मर्यादा, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा की याद दिलाता है।

राम ने अपने पिता के वचन को निभाने के लिए 14 वर्षों का वनवास स्वीकार किया, जो आज के समय में कर्तव्य और परिवार के प्रति समर्पण का सर्वोच्च उदाहरण है। राम नवमी के अवसर पर देशभर के मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना होती है। भक्तजन व्रत रखते हैं, रामचरितमानस का पाठ करते हैं और भजन-कीर्तन के माध्यम से भगवान राम का गुणगान करते हैं। अयोध्या सहित अनेक स्थानों पर शोभायात्राएं निकाली जाती हैं, जो इस पर्व की भव्यता को और बढ़ा देती हैं। यह पर्व हमें केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं रखता, बल्कि एक बेहतर समाज के निर्माण की प्रेरणा भी देता है। रामराज्य की कल्पना—जहां न्याय, समानता और सुख-शांति हो—आज भी हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों का आधार बनी हुई है। राम नवमी हमें यह संदेश देती है कि सच्चाई, धैर्य और मर्यादा के मार्ग पर चलकर ही जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। यदि हम भगवान राम के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएं, तो न केवल हमारा व्यक्तिगत जीवन सुधरेगा, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन आएगा।

रामनवमी: जीवन जीने की दिशा भी

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में राम नवमी केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाली प्रेरणा भी है। यह दिन भगवान राम के जन्म का प्रतीक है, जिन्हें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा जाता है—अर्थात मर्यादा, नैतिकता और आदर्श जीवन के सर्वोच्च उदाहरण।

आदर्शों से भरा जीवन

रामनवमी हमें सिखाती है कि जीवन केवल सफलता या सत्ता पाने का नाम नहीं है, बल्कि अपने कर्तव्यों और मूल्यों को निभाने का नाम है। भगवान राम ने हर परिस्थिति में सत्य, धर्म और कर्तव्य को सर्वोपरि रखा—चाहे वह वनवास हो, परिवार के प्रति जिम्मेदारी हो या प्रजा के प्रति कर्तव्य।

संतुलन और संयम का संदेश

आज की तेज़ रफ्तार जिंदगी में जहां स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, राम का जीवन संयम और संतुलन का संदेश देता है। उन्होंने क्रोध, अहंकार और लोभ पर नियंत्रण रखते हुए जीवन जिया—जो आज भी हर व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक है।

रिश्तों की मर्यादा

रामनवमी हमें यह भी सिखाती है कि रिश्तों की गरिमा बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है। राम ने पुत्र, भाई, पति और राजा—हर भूमिका में आदर्श स्थापित किया। उनके जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि संबंध केवल अधिकार नहीं, बल्कि जिम्मेदारी भी होते हैं।

संघर्ष में भी धैर्य

जीवन में कठिनाइयाँ आना स्वाभाविक है, लेकिन राम का जीवन बताता है कि धैर्य और सकारात्मक सोच से हर संकट को पार किया जा सकता है। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए।

आज के संदर्भ में रामनवमी

आज के समय में रामनवमी केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि इसे अपने जीवन में उतारने की जरूरत है। ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सहनशीलता और न्याय—ये सभी गुण हमें बेहतर इंसान और बेहतर समाज बनाने में मदद करते हैं।

रामनवमी हमें याद दिलाती है कि सच्चा उत्सव केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन में है। जब हम भगवान राम के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाते हैं, तभी यह पर्व वास्तव में सार्थक होता है।

'डिप्रेशन' और 'डिस्ट्रैक्शन' के दौर में राम : नई पीढ़ी के लिए 10 माइंडफुलनेस सर्वाइवल मंत्र

उमेश कुमार साहू

सूचनाओं के इस महासागर में हम डेटा से तो समृद्ध हैं पर दिशा से दरिद्र। जहाँ 'सत्य' अब केवल एक 'ओपिनियन' बनकर रह गया है और 'चरित्र' सोशल मीडिया का एक 'स्टेटस', वहाँ राम का व्यक्तित्व हमारे 'सिस्टम' को क्लीन करने वाला एक 'एंटी-वायरस' है। रामनवमी महज एक त्यौहार नहीं, बल्कि खुद से मिलने का एक 'अपॉइंटमेंट' है। यदि मर्यादा पुरुषोत्तम आज के 'डिस्ट्रैक्शन' भरे दौर में होते, तो वे धैर्य और विवेक के सबसे बड़े 'इन्फ्लुएंसर' होते। आइए, राम के चरित्र की उन 10 फाइलों को 'अनजिप' करें, जो आधुनिक पीढ़ी के उलझे हुए जीवन को सुलझाने की पूरी सामर्थ्य रखती हैं।

1. 'इमोशनल रेजिलिएंस' (विपत्ति में भी अडिगता)

आज की पीढ़ी को 'तनाव' विरासत में मिला है। राम का जीवन सिखाता है कि जिस सुबह राज्याभिषेक होना था, उसी सुबह वनवास मिला पर उनके माथे पर एक शिकन तक न थी। यह 'डिप्रेशन' और 'एंग्जायटी' के दौर में सबसे बड़ी सीख है - कि आपकी खुशी बाहरी सत्ता की मोहताज नहीं, आपके आंतरिक संतुलन का परिणाम होनी चाहिए।

2. 'द आर्ट ऑफ डिटैचमेंट' (जुड़ाव और अलगाव का संतुलन)

राम ने महल छोड़ा, फिर सीता का साथ छूटा, अंत में देह भी छोड़ी। वे 'होल्ड' (पकड़ना) भी जानते थे और 'लेट गो' (छोड़ना) भी। आज की 'कंज्यूमरवादी' पीढ़ी, जो चीजों और लोगों से बुरी तरह चिपक जाती है, उनके लिए राम 'मिनिमलिज्म' और मानसिक स्वतंत्रता का सबसे बड़ा पाठ हैं।

3. 'इंक्लूसिव लीडरशिप' (अंतिम व्यक्ति का साथ)

राम ने अपनी सेना के लिए किसी समृद्ध साम्राज्य से 'फंडिंग' या सैन्य सहायता नहीं मांगी। उन्होंने चुना उन 'अंडरडॉग्स' को, जिन्हें दुनिया ने 'तुच्छ' समझकर छोड़ दिया था - वनवासी, वानर, भालू और यहाँ तक कि एक नन्हीं गिलहरी। यह दुनिया का पहला 'जीरो-बजट मैनेजमेंट' था, जहाँ राम ने सिखाया कि युद्ध संसाधनों से नहीं, बल्कि 'इंसानों के सही चुनाव' और उन पर 'भरोसे' से जीता जाता है। आज की 'कॉर्पोरेट डाइवर्सिटी' की दुनिया अब समझ रही है कि असली लीडर वह नहीं जो बड़ी डिग्री वालों को आदेश दे, बल्कि वह है जो समाज के अंतिम व्यक्ति के भीतर छिपे 'योद्धा' को जगा दे और उसे एक बड़े लक्ष्य के साथ जोड़ दे।

4. 'मर्यादा' यानी 'डिजिटल एथिक्स'

मर्यादा का अर्थ केवल नियम नहीं, बल्कि 'सेल्फ-सेंसरशिप' है। सोशल मीडिया पर कुछ भी बोल देने की आजादी के बीच राम का 'संयमित बोलना' सिखाता है कि आपकी ताकत आपकी जुबान पर आपके कंट्रोल से मापी जाती है। 'ट्रोल कल्चर' के दौर में राम एक 'साइलेंट डिग्निटी' हैं।

5. 'एम्पैथी' (दूसरे का दुःख समझना)

राम रावण को मारते समय भी उसे सम्मान देते हैं और लक्ष्मण को उसके चरणों में बैठकर नीति सीखने भेजते हैं। यह 'एम्पैथी' का चरम है। आज जब हम वैचारिक मतभेदों के कारण एक-दूसरे से नफरत करने लगते हैं, राम सिखाते हैं कि

शत्रुता 'बुराई' से होनी चाहिए, 'व्यक्ति' से नहीं।

6. 'अनकंडीशनल कमिटमेंट' (बिना शर्त वचनबद्धता)

'प्राण जाहु बरु बचनु न जाई' - यह आज के 'कॉन्ट्रैक्ट' और 'टर्म्स एंड कंडीशन्स' वाले युग में थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन 'विश्वसनीयता' (Credibility) ही आज के दौर की सबसे बड़ी करेंसी है। राम का चरित्र हमें अपनी बात का पक्का होना सिखाता है।

7. 'क्राइसिस मैनेजमेंट' (संकट में सृजन)

समुद्र ने रास्ता नहीं दिया, तो राम ने पुल बना लिया। आज के युवा जो 'करियर ब्लॉक' या 'लाइफ ब्लॉक' से डर जाते हैं, उनके लिए राम संदेश हैं कि अगर रास्ता न मिले, तो अपनी मेहनत और बुद्धिमानी से नया रास्ता 'इन्वेंट' (आविष्कार) किया जा सकता है।

8. 'जेंडर सेंसिटिविटी' (नारी के प्रति सम्मान)

अहिल्या के मौन का सम्मान और सीता के लिए पूरी लंका को चुनौती देना - श्रीराम सिखाते हैं कि 'मर्दानगी' का अर्थ शासन करना (Dominance) नहीं, बल्कि प्रेम और गरिमा की रक्षा करना है। आज के 'पजेशन' (कब्जे) वाले प्रेम के दौर में राम वह 'अल्टीमेट जेंटलमैन' हैं, जो बताते हैं कि एक संवेदनशील हृदय और पराक्रमी भुजाएं एक साथ रह सकती हैं। उनके लिए शक्ति का अर्थ दमन नहीं, बल्कि 'सम्मान' देना है।"

9. 'क्रिटिकल थिंकिंग' (विवेक का उपयोग)

राम हर कदम सोच-समझकर उठाते हैं। वे केवल परंपराओं को नहीं ढोते, बल्कि धर्म (सही कार्य) की रक्षा के लिए युद्ध लड़ते हैं। यह नई पीढ़ी को सिखाता है कि 'भीड़ चाल' का हिस्सा न बनें, बल्कि अपने विवेक का उपयोग कर सही और गलत का चुनाव करें।

10. 'स्टेबल सक्सेस' (स्थिर सफलता)

रावण की सफलता 'धमाकेदार' थी पर क्षणभंगुर, राम की सफलता 'स्थिर' थी और युगों-युगों के लिए। आज जो युवा 'शॉर्टकट' से सफल होना चाहते हैं, राम उनके लिए चेतावनी हैं कि 'विराट व्यक्तित्व' रातों-रात नहीं, बल्कि वर्षों के तप और संघर्ष से बनता है।

इस रामनवमी पर अयोध्या की गलियों और घर की देहरी पर दीप जलाना सार्थक है, लेकिन उससे भी अधिक अनिवार्य है अपने भीतर के 'अंधकार' और 'संशयों' को राम के इन 10 गुणों की मशाल से भस्म करना।

याद रखिए, राम होना किसी 'परफेक्शन' की अंतिम मंज़िल को पा लेना नहीं है, बल्कि गिरकर संभलने, टूटकर जुड़ने और हर विपरीत परिस्थिति में अपनी 'मानवीय गरिमा' को बचाए रखने की एक निरंतर यात्रा है। राम हमारे भीतर का वह मौन हैं, जो कोलाहल में भी हमें सही रास्ता दिखाता है। आइए, इस वर्ष हम केवल राम की पूजा न करें, बल्कि अपने भीतर थोड़ा सा 'राम' होने का प्रयास करें।

(युवराज फीचर्स)

जगत के पिता

राम सुख के सागर,
करतें हैं हम सब पर कृपा
उनका 'विश्वास' व त्याग अमर,
वह है, हमारे 'जगत' के पिता।

'राम' नाम की छवि 'मनोहारी',
राम से ही जग अभिलाषी
उनके बिना तो पत्ता भी नहीं हिलता,
वह है, हमारे 'जगत' के पिता।

मर्यादा पुरुषोत्तम राजा 'राम' के,
कर्म ने सिखा दिया मनुष्य धर्म
मानव कल्याण का मार्ग दिखा दिया श्री राम ने,
वह है, हमारे 'जगत' के पिता।

आओ हम सब 'मिलकर' मनाएं
'रामनवमी महोत्सव',
साथ मिलकर गायें रामनाम
शहर हो या गाँव हर जगह निकले प्रभु राम की शोभायात्रा,
वह है, हमारे 'जगत' के पिता।

क्योंकि भये प्रकट दीनदयाल कौशल्या हितकारी,
'राम' नाम से ही चलती है केवट की नौका हमारी।
वह 'राम' ही है, जिन्होंने शबरी के झूठे बेर खाए,
वह है 'जगत' के पिता मेरे राम॥

हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्य-प्रदेश

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 386, नई दिल्ली, गुरुवार 26 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 सड़कों पर दिल्ली सरकार का 'फोकस', अगले साल 600 किमी सड़कें बनेंगी...

06 कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में रहना

08 नन्हें शेर शावक नवरात्र में बिरसा जैविक उद्यान राँची पहुंचा

करोल बाग इलाके में बड़ा हादसा, पलटी डबल डेकर बस, 2 की मौत

दिल्ली के करोल बाग में झंडेवालान मंदिर के पास एक डबल डेकर बस पलटने से दो लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए. बस राजस्थान से आ रही थी और इसमें लगभग 25 यात्री सवार थे.

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के करोल बाग इलाके में मंगलवार-बुधवार (24-25 मार्च) की दर्मियानी रात बड़ा हादसा हो गया. करोल बाग में झंडेवालान मंदिर के पास अचानक एक डबल डेकर बस पलट गई. बस में कई यात्री सवार थे जिन्हें गंभीर चोटें आई हैं, जबकि दो लोगों की दर्दनाक मौत की खबर है.

हादसा देर रात करीब 1.10 के करीब का बताया जा रहा है. प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि बस का संतुलन अचानक बिगड़ा और वह पलट गई. दमकल विभाग के मुताबिक, यह बस राजस्थान से आ रही थी. उन्हें कॉल रात 1 बजकर 10 मिनट पर मिली. इस बस में तकरीबन 25 यात्री सवार थे, जिनमें से ज्यादातर घायल हैं और उनका इलाज पास के अस्पताल में चल रहा है. 2 लोगों की मौत की जानकारी मिली है. पुलिस आगे की जांच कर रही है.

चकनाचूर हुई बस की खिड़कियां

हादसे के बाद घटनास्थल का दृश्य भयावह था. सड़क पर कांच के टुकड़े बिखरे पड़े थे. यात्रियों के सामान, जूते-चप्पल, खाने पीने की चीजें जमीन पर पड़े थे. बस का फ्रंट मिरर चकनाचूर हो चुका था.

हाई स्पीड में बस होने का दावा

वहां देर रात मौजूद एक ऑटो चालक ने जानकारी दी है कि बस की स्पीड बहुत ज्यादा थी. गोल चक्कर आने से पहले बस 70 से 80 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से जा रही थी. इसके बाद आगे जाकर अनियंत्रित होकर पलट गई. यात्री खुद को बचाने के लिए खिड़कियों से कूद रहे थे. उनके शरीर से खून बह रहा था. पुलिस को सूचित किया गया और उनके आने से पहले से ही लोगों को बचाने की कोशिश की जाने लगी.

JCB के सहारे रस्सी डालकर लोगों को निकाला

एक और ऑटो चालक दीपक ने बताया कि देर रात 1-1.30 बजे यह हादसा हुआ. उन्हें लगता है कि ड्राइवर को नींद आ गई होगी क्योंकि सड़क पर कोई रुकावट नहीं थी. हादसे के बाद बस के पीछे एक बच्चा फंस गया था, उसे निकाला. एक महिला भी फंसी हुई थी, उसे बचाया. वहां एक जेसीबी खड़ी थी, उसका सहारा लेकर रस्सियां डालकर लोगों को बस से बाहर निकाला. तब तक पुलिस भी मौके पर पहुंच गई और रेस्क्यू ऑपरेशन में जुट गई.

शादी की तैयारी मातम में बदली; तीन माह की गर्भवती का उजड़ा सुहाग

करोल बाग बस हादसे ने दो परिवारों की खुशियां हमेशा के लिए छीन लीं। एक ओर जहां महेश की अगले माह 20 अप्रैल को शादी तय हुई थी वहीं, शहबाज आलम की तीन माह की गर्भवती पत्नी का सुहाग उजड़ गया। मूलरूप से बरेली के कनूनगला गांव का महेश कुमार हरियाणा के बिलासपुर में किराए के घर में अपने बड़े भाई मुकेश कुमार के साथ रहता था।

दोनों ब्लूडार्ट कंपनी में डिलीवरी ब्वाय की नौकरी करते थे। चूंकि अगले महीने महेश की शादी तय हुई थी तो दोनों छुट्टी लेकर घर जाने के लिए निकले थे और हादसे का शिकार हो गए। हालांकि इस हादसे में मुकेश की तो जान बच गई, लेकिन उसके शरीर पर महेश के खून के धब्बे और वो भयानक मंजर यादकर उसकी आंखों से आंसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। गमगीन हालत में उसने बताया कि महेश उनके साथ खिड़की वाली साइड पर बैठा था। दोनों नींद में थे और जैसे ही बस अनियंत्रित होकर पलटी महेश खिड़की में फंस और उसका आधा शरीर खिड़की में ही फंसा रहा गया।

सड़कों पर दिल्ली सरकार का 'फोकस' अगले साल 600 किमी सड़कें बनेंगी...

दिल्ली सरकार सड़कों की खराब हालत सुधारने पर विशेष ध्यान दे रही है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में, सरकार ने पिछले बजट के बाद अब अगले बजट में भी सड़कों को प्राथमिकता दी है। लक्ष्य है कि 31 मार्च तक 400 किलोमीटर और अगले साल 600 किलोमीटर सड़कें बनाई जाएंगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पिछले 10 सालों में देश की राजधानी दिल्ली में सड़कों की बदतर हालत को लेकर जिस तरह बदनाम रही है, इसके पिछली सरकार को हुए नुकसान की अहमियत को वर्तमान रेखा गुप्ता सरकार अच्छे से समझ रही है। शायद यही कारण है वर्तमान सरकार सड़कों पर सबसे ज्यादा ध्यान दे रही है।

पिछले बजट में महत्व देने के बाद मंगलवार को पेश किए गए अगले साल के बजट में भी सड़कों को पिछले साल से भी महत्व दिया गया है। सरकार की मंसा सड़कों पर केवल डेंस कारपेटिंग की ही नहीं है बल्कि फुटपाथ और सेंट्रल वर्ज तक को भी व्यवस्थित करना भी है। उधर, सीएम के अनुरोध पर एनएचएआई ने भी अपनी सड़कों की दशा सुधारने का काम शुरू किया है।

लंबाई 1440 किलोमीटर के करीब

लोक निर्माण विभाग के पास दिल्ली की प्रमुख सड़कें हैं जिनकी लंबाई 1440 किलोमीटर के करीब है। सड़क परिवहन से जुड़े विशेषज्ञों की मानें तो यह सरकार सड़कों के मामले में बेहतर काम इसीलिए भी कर पा रही है और करती रहेगी, क्योंकि इसे केंद्र सरकार से भी इस काम से लिए मदद मिल रही है।

एक तरफ सरकार ने कई महत्वपूर्ण और बडे.खर्च वाली सड़कों को एनएचएआई को सौंपने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। वहीं सड़कों के लिए केंद्र से भी फंड हासिल कर रही है।

पिछले कुछ महीनों की बात करें तो मानसून के समय सरकार जरूर सड़कों की खराब हालत को लेकर विवाद में आ गई थी। मगर उसके बाद से जिस तरह से इस सरकार ने गड्ढे भरने और सड़कें

सरकार ने कई महत्वपूर्ण और बडे.खर्च वाली सड़कों को एनएचएआई को सौंपने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। सांकेतिक तस्वीर। सौजन्य- AI

बनाने का काम किया है वह दिल्ली में जनता को दिखाने भी लगा है।

प्रभावी तरीके से सरकार रणनीति बना रही

दिल्ली सरकार के अधिकारियों के अनुसार दिल्ली सरकार और केंद्र सरकार से मिले फंड के तहत 31 मार्च तक 400 किलोमीटर सड़कों को बनाने का काम पूरा किए जाने का लक्ष्य है। वहीं एक अप्रैल से अगले पूरे साल में 600 किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया जाना है। जिसमें मानसून से पहले करीब 200 किलोमीटर सड़कों का काम पूरा करने का लक्ष्य रखा है। इसमें भी मानसून को दौरान इस बार गड्ढे भरने के काम को और प्रभावी तरीके से सरकार रणनीति बना रही है।

सीएम के अनुरोध पर एनएचएआई ने शुरू किया काम

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण प्राधिकरण (एनएचएआई) को भी दिल्ली की सीमा के अंदर स्थित उनकी सड़कों को बेहतर किए जाने के लिए कहा है। कुछ समय पहले हुई मुख्यमंत्री की बैठक में एनएचएआई के अधिकारियों ने आश्वस्त किया था कि वह जल्द ही अपनी सड़कों को बेहतर बनाने का काम शुरू करेंगे। इसके बाद एनएचएआई ने दिल्ली के सीमा में राजमार्गों पर सड़कों को बेहतर बनाने का काम शुरू किया है। पिछले हफ्ते ही दिल्ली से मेरठ एक्सप्रेस पर यमुना के पास सड़क पर डेंस कारपेटिंग का काम चल रहा है।

सड़कों के मामले में बहुत काम करने की जरूरत : दिनेश कुमार

₹पिछले कई सालों से सड़कों की रही खराब हालत को देखते हुए सड़कों के मामले में बहुत काम करने की जरूरत है। लोगों को सहूलियत देने के लिए सरकार को उन सड़कों को पहले बनाना चाहिए जो ज्यादा खराब हैं। अन्य सड़कों से रिंग रोड की हालत अच्छी है। हालांकि सड़कों की हालत में पहले से सुधार हुआ है।₹

-दिनेश कुमार, पूर्व प्रमुख अभियंता, लोक निर्माण विभाग।

सड़कों को आधुनिक बनाने की रणनीति

₹राजधानी की सड़कों को गड्ढामुक्त, धूल-रहित और आधुनिक बनाने की हमारी रणनीति है। 400 किमी से अधिक प्रमुख सड़कों का 'वॉल-टू-वॉल' पुनर्विकास किया जाना है। यह काम 45 से ज्यादा विधानसभाओं में पूरा किया जाना है। यह काम 'वाल-टू-वाल' (किनारे से किनारे तक) कारपेटिंग मॉडल पर होगा ताकि सड़क के दोनों किनारों को भी समतल और मजबूत किया जा सके।"

-प्रवेश वर्मा, मंत्री-लोक निर्माण विभाग।

शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल संबंधी संसदीय स्थायी समिति की 377वीं रिपोर्ट जारी

संगिनी घोष

संसदीय स्थायी समिति (शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल) ने अपनी 377वीं रिपोर्ट जारी की है, जिसमें शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल क्षेत्रों से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है।

रिपोर्ट में विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन, संस्थागत चुनौतियों और विभिन्न क्षेत्रों के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों जैसे संवेदनशील वर्गों के लिए चल रही योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

समिति ने शिक्षा क्षेत्र में बुनियादी ढांचे, पहुंच और गुणवत्ता को मजबूत करने की आवश्यकता बताई है। साथ ही युवाओं की भागीदारी बढ़ाने और खेल क्षेत्र के विकास के लिए अधिक अवसर उपलब्ध कराने पर भी बल दिया गया है।

अधिकारियों के अनुसार, इस रिपोर्ट की सिफारिशें भविष्य की नीतियों को दिशा देने और इन क्षेत्रों में चल रही योजनाओं को अधिक प्रभावी बनाने में मदद करेंगी।

ऐसे देखें तो यह रिपोर्ट इस बात को दर्शाती है कि शिक्षा और सामाजिक क्षेत्रों में विकास को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने के लिए नीतिगत सुधारों की आवश्यकता है।

मुख्य बिंदु

* संसदीय स्थायी समिति (शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल) ने 377वीं रिपोर्ट जारी की
* शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल क्षेत्रों पर फोकस
* योजनाओं के बेहतर कार्यान्वयन और समन्वय पर जोर
* शिक्षा में बुनियादी ढांचे और गुणवत्ता सुधार की आवश्यकता
* युवाओं और खेल क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाने पर बल
* भविष्य की नीतियों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगी रिपोर्ट

SEO Meta Description:

संसदीय स्थायी समिति ने शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल से संबंधित 377वीं रिपोर्ट जारी की, जिसमें नीतिगत सुधार और समावेशी विकास पर जोर दिया गया है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

डिवाइस ब्लॉकिंग साइबर घोटालों के खिलाफ अग्रिम पंक्ति की रक्षा है। यह सिम बॉक्स आधारित धोखाधड़ी को रोकने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यह धोखेबाज़ों के उपकरणों को बंद कर देती है, पीड़ितों की सुरक्षा करती है और जांच को मजबूत बनाती है।

हाल ही में भारत सरकार ने व्हाट्सऐप को निर्देश दिया है कि वह "डिजिटल अरेस्ट" घोटालों से जुड़े डिवाइस आईडी को ब्लॉक करे — केवल अकाउंट स्तर पर प्रतिबंध लगाने से आगे बढ़कर हार्डवेयर स्तर पर रोक लगाए। इसका उद्देश्य यह है कि धोखेबाज़ अकाउंट निलंबित होने के बाद नए अकाउंट बनाकर वापस न आ सकें।

डिवाइस ब्लॉकिंग क्यों महत्वपूर्ण है

- चल रहे धोखे को रोकता है: धोखाधड़ी वाले सिम, फोन या अकाउंट तुरंत बंद हो जाते हैं।
- दोबारा उपयोग रोकता है: धोखेबाज़ चोरी किए गए उपकरण या सिम को दोबारा इस्तेमाल नहीं कर सकते।
- पीड़ितों की सुरक्षा करता है: आगे की अनधिकृत लेन-देन या संचार को रोकता है।
- जांच को समर्थन देता है: डिजिटल सबूत सुरक्षित रहते हैं और घोटाले का प्रसार सीमित होता है।

प्रमुख ब्लॉकिंग तंत्र

1. सिम ब्लॉकिंग

o दूरसंचार कंपनियाँ धोखाधड़ी से जुड़े सिम को निष्क्रिय करती हैं।

o सिम स्वैप धोखाधड़ी, ओटीपी दुरुपयोग या बल्क सिम बॉक्स मामलों में आवश्यक।

2. IMEI ब्लॉकिंग

o CEIR के माध्यम से ब्लैकलिस्ट करने पर चोरी/दुरुपयोग किए गए उपकरण किसी भी भारतीय नेटवर्क से जुड़ नहीं पाते।

o सिम बॉक्स घोटालों को रोकता है: प्रत्येक सिम बॉक्स का एक विशिष्ट IMEI होता है। CEIR (सेंट्रल इक्विपमेंट आइडेंटिटी रजिस्टर) के माध्यम से इन IMEI को ब्लैकलिस्ट करने पर वे किसी भी भारतीय नेटवर्क से जुड़ नहीं पाते।

3. अकाउंट ब्लॉकिंग

o बैंक और भुगतान प्लेटफ़ॉर्म धोखाधड़ी वाले अकाउंट को फ्रीज़ करते हैं ताकि धन siphon न हो सके।

4. ऐप/प्लेटफ़ॉर्म ब्लॉकिंग

o मैसेजिंग ऐप, वॉलेट और सोशल मीडिया धोखाधड़ी से जुड़े अकाउंट को निलंबित करते हैं ताकि फ़िशिंग और नकली प्रोफ़ाइल का प्रसार रुके।

चुनौतियाँ

- समन्वयः पुलिस, दूरसंचार, बैंक और नियामकों के बीच त्वरित कार्रवाई आवश्यक।

जागरूकताः पीड़ित अक्सर रिपोर्ट करने में देर करते हैं, जिससे धोखेबाज़ों को अधिक समय मिलता है।

विस्तार क्षमताः धोखेबाज़ हजारों सिम/डिवाइस का उपयोग करते हैं; बड़े पैमाने पर ब्लॉकिंग संसाधन-गहन है।

सर्वोत्तम कार्यप्रवाह

1. पीड़ित धोखा रिपोर्ट करता है → पुलिस/NCRP शिकायत दर्ज करती है।
2. तुरंत अनुरोध → दूरसंचार/बैंक सिम/अकाउंट/डिवाइस ब्लॉक करते हैं।

उद्यान अनुसंधान केंद्र रईया करेगा बागवानी किसानों के सपने साकार :धनखड़

परिवहन विशेष न्यूज

रईया उद्यान अनुसंधान केंद्र में आयोजित हवन में पंहुचे पूर्व कृषि मंत्री औमप्रकाश धनखड़

मसाले, फल, फूल, सजावटी पौधों जैसी मूल्यवान खेती पर फोकस करें किसान-बोले धनखड़

महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय के वीसी प्रो सुरेश मल्होत्रा की रही गरिमामय मौजूदगी

झज्जर, 25 मार्च। महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय करनाल का रईया अनुसंधान केंद्र क्षेत्र के साथ साथ प्रदेशभर के बागवानी किसानों के सपनों को साकार करेगा। अनुसंधान केंद्र में आयोजित हवन में बतौर मुख्य अतिथि पंहुचे प्रदेश के पूर्व कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री औमप्रकाश धनखड़ ने केंद्र में प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते हुए यह बात कही। कार्यक्रम में बतौर विशिष्टां अतिथि महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय के वीसी प्रो सुरेश मल्होत्रा ने शिरकत की।

अपने प्रोडक्ट की ब्रांडिंग करना सीखें युवा किसान

पूर्व कृषि मंत्री ने कहा कि क्षेत्र में बागवानी अनुसंधान केंद्र का शुरू होना सभी के लिए गर्व और गौरव की बात है। अनुसंधान केंद्र में बागवानी वैज्ञानिक अच्छी किस्म की पौध तैयार करेंगे और बागवानी किसानों को उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने कहा कि एनसीआर क्षेत्र को हम ताजा फल, सब्जी, फूल उपलब्ध कराने की ताकत रखते हैं। यह सालाना लगभग 40 हजार करोड़ रुपये की मार्केट है। हमारे युवा अपने प्रोडक्ट की ब्रांडिंग करना सीख लें। मार्केट पर हमारा कब्जा होगा। सजावटी पौधों की बड़ी मार्केट उभर रही है। मुनीमपुर में फूल एवं बीज उत्कृष्टता केंद्र क्षेत्र के किसानों के लिए फूलों की नई नई किस्में ईजाद कर रहा है।

जीवन बदलने की संस्था बनें

गुरूग्राम में एग्री बिजनेस स्कूल, मुनिमपुर फूल एवं बीज उत्कृष्टता केंद, रईया में उद्यान अनुसंधान केंद्र जैसे संस्थान हमारे किसानों का जीवन बदलने के संस्थान साबित होंगे। उन्होंने कहा कि हमने नहर टूटने पर, ड्रेन ओवरफ्लो होने पर मुआवजा देना शुरू किया। जोखिम फ्री खेती के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, बागवानी भावांतर भरपाई योजना सहित जैसे किसान हितैषी कार्य किए गए। हमारे विरोधी भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि इन योजनाओं के लागू होने से किसानों का जीवन सरल हुआ है। धनखड़ ने आह्वान किया कि किसान इस केंद्र का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाएं।

रईया केंद्र अखिल भारतीय उद्यान अनुसंधान केंद्र से जुड़ा: वीसी मल्होत्रा

महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय करनाल के वीसी प्रो सुरेश मल्होत्रा ने कहा कि रईया केंद्र अखिल भारतीय बागवानी अनुसंधान केंद्र से जुडक़र देश के मैप पर आ गया है , जल्द ही यह केंद्र अनुसंधान के क्षेत्र में विश्व के मैप पर अपनी पहचान स्थापित करेगा। यह सब पूर्व कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और आज के हमारे मुख्य अतिथि औमप्रकाश धनखड़ जी के प्रयासों से पूरा हुआ है। उनका प्रयास है यह उत्कृष्टां अनुसंधान केंद्र बनकर उभरे। मूल्यवान फसलों की नई नई किस्म तैयार की जा सके।

धनखड़ किसान कल्याण के बड़े पैरोकार: बोले वीसी

प्रो सुरेश मल्होत्रा ने कहा कि पहले कृषि मंत्रालय होता था। धनखड़ साहब ने वर्ष 2014 में प्रदेश का कृषि बनते ही खेती किसानी की नीतियों को किसान कल्याण पर केंद्रित करते हुए विभाग का नाम भी कृषि एवं किसान कल्याण विभाग कर दिया । इनकी सोच हमेशा किसान, पशुपालक के भले की रही है। इन्ही के प्रयासों आज यहां राष्ट्रीय स्तरीय संस्थान बनकर उभर रहा है। जल्द प्रदेश के मुख्यमंत्री और केंद्रीय कृषि मंत्री का समय लेकर इसका विधिवत रूप से उदघाटन कराया जाएगा।

मुख्य अतिथि पूर्व कृषि मंत्री धनखड़ ने डॉ मंजू पूनिया, तकदीर सिंह, नवनीत, आदेश, सुरेंद्र सिहं , बिजेंद्र सहित जागरूक किसानों को सम्मानित किया । केंद्र में आयोजित ओग्रेनिक कृषि उत्पाद की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इससे पहले केंद्र आयोजित हवन में पूर्ण आहूति डालते हुए क्षेत्र और प्रदेश की समृद्धि कामना की।

कार्यक्रम में क्षेत्र की सरदारी, अनुसंधान निदेशक डॉ धर्मपाल चौधरी, संपदा अधिकारी सुरेश सैनी, डॉ सतपाल यादव, दर्जनभर गांवों से ग्राम पंचायतें, सोमवीर कोडान, विजय रईया, महाबीर रईया, संदीप हसनपुर, कृष्ण कुंजिया, अशोक डावला, चेयरमैन जोगेंद्र सिलानी धर्मबीर नंबरदार, प्रकाश माजरा, राजपाल नंबरदार सहित काफी संख्या में जागरूक किसान मौजूद रहे।

एलपीजी गैस सिलेंडरों की पर्याप्त उपलब्धता, जमाखोरी पर सख्ती : डीसी

जिला की एजेंसियों पर दस हजार 266 घरेलू सिलेंडर स्टॉक में, उपभोक्ताओं को नियमानुसार हो रही आपूर्ति

झज्जर, 25 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जिले में एलपीजी गैस की आपूर्ति पूर्ण रूप से सुधार है तथा किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है। प्रशासन द्वारा गैस सिलेंडरों की जमाखोरी एवं कालाबाजारी पर कड़ी नजर रखी जा रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अनियमितता या अफवाह फैलाने वालों के विरुद्ध तत्काल प्रभाव से नियमानुसार सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

डीसी ने बताया कि आमजन को घबराने की आवश्यकता नहीं है। रसोई गैस की पर्याप्त उपलब्धता बनी हुई है, इसलिए उपभोक्ता अनावश्यक रूप से पैनिक होकर एलपीजी बुकिंग न करें और केवल आवश्यकता अनुसार ही गैस की खरीद करें। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे गैस, पेट्रोल व डीजल के स्टॉक एवं आपूर्ति की नियमित निगरानी सुनिश्चित करें।

उन्होंने आगे जानकारी देते हुए बताया कि आज जिले में 10 आवेदनकर्ताओं को विवाह एवं अन्य कार्यक्रमों के लिए 80 कमर्शियल गैस सिलेंडर उपलब्ध करवाए गए हैं। इसके साथ ही जिले में घरेलू गैस सिलेंडरों का कुल 10,266 का पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध है, जिससे आमजन को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होगी।

जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक राजेश्वर मुदगिल ने बताया कि घरेलू गैस सिलेंडरों की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा कालाबाजारी पर रोक लगाने के लिए विभाग द्वारा विशेष निगरानी अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत अधिकारियों एवं कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है, जो गैस एजेंसियों और वितरण प्रणाली पर सतत नजर बनाए हुए हैं। सभी आपूर्तिकर्ताओं से प्रतिदिन रिपोर्ट भी प्राप्त की जा रही है।

उन्होंने आमजन से अपील करते हुए कहा कि यदि गैस सिलेंडर की आपूर्ति, कीमत या वितरण से संबंधित कोई शिकायत सामने आती है तो इसकी सूचना तुरंत खाद्य एवं आपूर्ति विभाग को दें, ताकि समय रहते प्रभावी कार्रवाई कर समस्या का शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जा सके।

हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने किए मां भीमेश्वरी देवी के दर्शन

-एक साथ देवी माता के दो मंदिर होना अपने आप में एक इतिहास-बोले कृषि मंत्री

-विश्व प्रसिद्ध माता भीमेश्वरी देवी दर्शन के लिए धर्मनगरी बेरी पहुंचे कैबिनेट मंत्री श्री श्याम सिंह राणा

बेरी, (झज्जर) 25 मार्च। धर्मनगरी बेरी में स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में बुधवार की सायं हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने देवी मंदिर पहुँच माता के दर्शन कर पूजा अर्चना की। इससे पहले माता भीमेश्वरी देवी श्राइन बोर्ड की सीईओ रेणुका नांदल ने कृषि मंत्री का स्वागत किया।

स्मरण रहे विश्व प्रसिद्ध माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में नवरात्रों के अलावा प्रतिदिन दूर दराज से श्रद्धालु दर्शन के आते हैं और पूजा अर्चना के साथ मन्नतें मांगते हैं। बुधवार की सायं हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में दर्शन के लिए पहुँचे और पूजा अर्चना की । देवी मंदिर के प्रमुख पुजारी पंडित पुरुषोत्तम वशिष्ठ ने कैबिनेट मंत्री को ऐतिहासिक कस्बा बेरी और माता भीमेश्वरी देवी के दोनों मंदिरों से जुड़े इतिहास की विस्तार से जानकारी दी। मंदिर से जुड़ी परंपरा जानने के बाद कृषि मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने कहा कि विश्व प्रसिद्ध माता भीमेश्वरी देवी मंदिर आकर सुखद महसूस हो रहा है। उन्होंने कहा कि जगत माता का आशीर्वाद सभी पर बना रहे, ऐसी माता से प्रार्थना करते हैं। उन्होंने कहा कि बेरी का इतिहास काफी पुराना है। एक साथ देवी माता के दो मंदिर होना अपने आप में एक इतिहास है। इन मंदिरों में महर्षि दुर्वासा के समय की पूजा पद्धति का आज भी अनुशरण हो रहा है, यह सराहनीय है। इस अवसर पर नपा चेयरमैन देवेंद्र कादियान, बीडीपीओ राजाराम सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

जनसमस्याओं के त्वरित प्रभावी समाधान के लिए सरकार प्रतिबद्ध : कृषि मंत्री

हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा की अध्यक्षता में जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठक आयोजित

- परिवेदना समिति की बैठक में 18 मे से 17 परिवादों का मौके पर निपटारा

झज्जर, 25 मार्च। जिला मुख्यालय स्थित संवाद भवन में बुधवार को जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की मासिक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने अध्यक्षता करते हुए आमजन की समस्याओं को गंभीरता से सुना। बैठक के दौरान कुल 18 शिकायतें प्रस्तुत की गईं, जिनमें से 17 का मौके पर ही निपटारा कर दिया गया, जबकि एक मामले पर संबंधित विभाग को प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

कैबिनेट मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने कहा कि प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में जनसेवा ही सुशासन के मूल मंत्र को अपनाते हुए कार्य कर रही है। सरकार का स्पष्ट उद्देश्य है कि प्रत्येक नागरिक को उसकी समस्या का समाधान पारदर्शी, त्वरित एवं संतोषजनक ढंग से मिले। उन्होंने कहा कि परिवेदना समिति की बैठकें प्रशासनिक जवाबदेही को सुदृढ़ करने के साथ-साथ शासन और आमजन के बीच विश्वास को मजबूत करने का एक सशक्त माध्यम हैं।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि शिकायतों के निस्तारण में किसी प्रकार की लापरवाही या अनावश्यक विलंब सहन नहीं किया जाएगा। प्रत्येक शिकायत की जांच निष्पक्षता, संवेदनशीलता और पारदर्शिता के साथ की जाए तथा शिकायतकर्ता को हर स्तर पर जानकारी दी जाए, ताकि उसे न्याय का पूर्ण भरोसा मिल सके।

कृषि मंत्री ने कहा कि सरकारी योजनाओं और सेवाओं की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जब उसका लाभ अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक समय पर पहुंचे। इसके लिए आवश्यक है कि सभी विभाग आपसी समन्वय स्थापित कर कार्य करें और लंबित मामलों का प्राथमिकता के आधार पर समाधान सुनिश्चित करें। उन्होंने अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए कि वे फील्ड में जाकर समस्याओं की वास्तविक स्थिति का आकलन करें और जमीनी स्तर पर सुधार लाने के लिए ठोस कदम उठाएं।

बैठक में उपस्थित जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने भी विभिन्न जनहित मुद्दों को उठाते हुए उनके समाधान के लिए सुझाव दिए, जिन पर कैबिनेट मंत्री ने सकारात्मक रुख अपनाते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

यह अधिकारी एवं गणमान्य रहे उपस्थित

बैठक में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल, डीसीपी बहादुरगढ़ मयंक मिश्रा, एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, एसडीएम बादली डॉ. रमन गुप्ता, सीटीएम नमिता कुमारी, बेरी नगर पालिका चेयरमैन देवेंद्र कादियान, डीआरओ मनवीर सांगवान, डीडीपीओ निशा तंवर, एलडीएम विजय सिंह सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी व गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

विश्व में शांति स्थापित करने में अहम भूमिका निभाते हैं महायज्ञ : कृषि मंत्री

-समाज में शांति केवल सुरक्षा से ही नहीं, बल्कि आंतरिक सद्भाव से भी उत्पन्न होती है शांति - बोले श्री श्याम सिंह राणा

-हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर परिसर के साथ लगते बाबा बुद्धपुरी पार्क में चल रहे विश्व शांति महायज्ञ में डाली आहुति

बेरी(झज्जर) 25 मार्च। धर्मनगरी बेरी में माता भीमेश्वरी देवी मंदिर के साथ लगते बाबा बुद्ध पुरी पार्क में बुधवार से तीन दिवसीय विश्व शांति महायज्ञ की शुरुआत हो गई। वैश्विक शांति, आपसी सद्भाव और आध्यात्मिक एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से माता भीमेश्वरी देवी मंदिर परिसर में तीन दिवसीय 'विश्व शांति महायज्ञ' में बाद दोपहर हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने भाग लिया। बुधवार की सुबह पुलिस आयुक्त डॉ राजश्री सिंह ने मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ में आहुति डाली। आचार्य योगेश शास्त्री ने हवन में मंत्रोच्चारण कर प्रथम दिन का हवन पूर्ण करवाया।

महायज्ञ के प्रथम दिन पहुंचे हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने इस विशेष पहल का नेतृत्व कर रही पुलिस आयुक्त डॉ राजश्री सिंह तथा कार्यक्रम का आयोजन कर रही डॉ जैकलीन जिंदल को बधाई भी दी।

इस अवसर पर कृषि मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी तथा मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में सरकार देश प्रदेश में शांति कायम रखने के लिए सजगता से कार्य कर रही है और इस प्रकार के महायज्ञ विश्व में शांति स्थापित करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

उन्होंने कहा कि विश्व के अन्य देशों में भी शांति, समृद्धि व विकास के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी विश्व पटल पर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को साकार करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है। महायज्ञ के माध्यम से समाज में भाईचारे, प्रेम और सकारात्मक ऊर्जा का संदेश जाएगा।

उन्होंने विश्व शांति महायज्ञ 2026 के माध्यम से आध्यात्मिक मूल्यों को लोक सेवा के साथ एकीकृत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए कहा कि समाज में सच्ची शांति केवल सुरक्षा से ही नहीं, बल्कि आंतरिक सद्भाव से भी उत्पन्न होती है। उनके प्रयास सांस्कृतिक लोकाचार और सामाजिक जिम्मेदारी की गहरी समझ को दर्शाते हैं, जो नागरिकों को एक उच्च उद्देश्य के लिए एकजुट होने के लिए प्रेरित करते हैं।

कैबिनेट मंत्री ने कहा यह आयोजन लोगों को एक मंच पर लाकर वैश्विक शांति और सार्वभौमिक सद्भाव के लिए एकजुट करने का कार्य करेगा। उन्होंने बताया कि महायज्ञ के दौरान वातावरण को शुद्ध करने, नकारात्मकता को दूर करने और मानवता के कल्याण की कामना की जा रही है। उन्होंने आमजन से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर इस पवित्र यज्ञ में भाग लेने की अपील की है।

इस अवसर पर नपा चेयरमैन देवेंद्र कादयान, मार्किट कमेटी के चेयरमैन राजेंद्र शर्मा, दिनेश शर्मा, पार्षद तवीन , अंजित कादयान , राजीव मित्तल, पवन जिंदल, डा राजेश्वर कादियान के अलावा एसीपी अनिल कुमार व अनिरुद्ध चौहान, एसीपी दिनेश कुमार सहित काफी संख्या में श्रद्धालु गण मौजूद रहे।

नायब सैनी के नेतृत्व में हरियाणा विकास की नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर : कमल सैनी

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) वरिष्ठ भाजपा नेता एवं चेयरमैन, ऑल इंडिया स्पोर्ट्स काउंसिल लेबर एंड एम्पलाई कमल सैनी ने हरियाणा में हो रहे विकास कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश आज प्रगति की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में हरियाणा ने विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं।

कमल सैनी ने कहा कि आज हरियाणा का प्रत्येक जिला राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ा हुआ है, जिससे आवागमन सुगम हुआ है और व्यापार, उद्योग व रोजगार के अवसरों में निरंतर वृद्धि हुई है। मजबूत सड़क नेटवर्क ने प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई गति दी है।

कमल सैनी ने बताया कि सभी जिलों में मेडिकल कॉलेज स्थापित करने का निर्णय आमजन के लिए लाभकारी सिद्ध हो रहा है। इससे लोगों को अपने क्षेत्र में ही बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होंगी और युवाओं को मेडिकल शिक्षा के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

कमल सैनी ने कहा कि महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए चलाई जा रही योजनाएं, विशेष रूप से लाडो लक्ष्मी योजना, समाज में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। कम आय वर्ग की महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का कार्य सराहनीय है।

कमल सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का नेतृत्व पारदर्शी, जनहितैषी और विकासोन्मुख है। उनके मार्गदर्शन में हरियाणा "सबका साथ, सबका विकास" के संकल्प को साकार करते हुए तेजी से आगे बढ़ रहा है।

अंत में कमल सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा भविष्य में देश के अग्रणी राज्यों में अपनी सशक्त पहचान स्थापित करेगा और विकास का नया मॉडल बनेगा।

शहीद यादगार कमेटी, बरेली द्वारा विरोध व ज्ञापन:

(जगह-जगह विरोध, CM स्तर से कार्यवाही,AE..JE सस्पैंड,24 घंटे में सम्मान सहित स्थापना का वायदा)

(✍--भूपेंद्र सारस्वत'सारथी', बरेली उ0प्र0)

शाहजहांपुर में 1972 में स्थापित शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाकउल्ला खां और रोशन सिंह की प्रतिमाएं आज प्रात: 3 बजे अंधेरे में बहुत अपमानजनक ढंग से बुल्डोजर से तोड़ कर गिरा दी गईं और मलवा भी बहुत जल्द हटाकर गायब कर दिया गया,यह एक दुखद और शर्मनाक काम है शहीद यादगार कमेटी बरेली इसका पुरजोर विरोध करती है और दोपहर 2 बजे एक ज्ञापन राज्यपाल महोदय को जिलाधिकारी महोदय के माध्यम से भेजा गया है*ज्ञापन देने वालो में ध्यान चन्द्र मौर्य,ललित,लक्षण सिंह राणा मो फैसल,ट्रेड यूनियंस फेडरेशन के महामंत्री संजीव मेहरोत्रा,एडवोकेट टी डी भास्कर, एडवोकेट सी पी सिंह, एडवोकेट राजेश तिवारी, हरि बाबू,मुजाहिदीन आदि शामिल रहे।

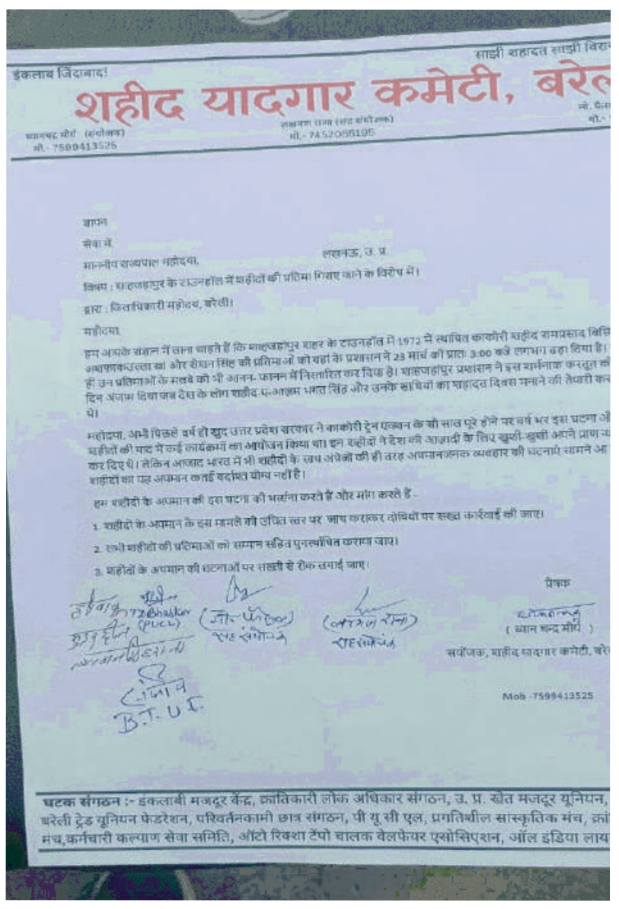

डीएवी पब्लिक स्कूल, सेक्टर-8, पंचकूला ने वार्षिक समारोह "नवांकुर" भव्यता के साथ मनाया

हरियाणा हिसार :राजेश सलूजा

डीएवी पब्लिक स्कूल, सेक्टर-8, पंचकूला ने अपना वार्षिक समारोह "नवांकुर" आयोजित किया, जिसमें छात्रों की उभरती प्रतिभा और समग्र विकास का उत्सव मनाया गया। यह कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ संपन्न हुआ और इसमें विशिष्ट अतिथियों, अभिभावकों तथा डीएवी परिवार के सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक दीप प्रज्वलन से हुई, जो ज्ञान और प्रकाश की विजय का प्रतीक है। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य अतिथियों में डीसीपी पंचकूला, डीईओ पंचकूला, बीईओ पंचकूला, स्कूल के चेयरमैन एवं वाइस चेयरमैन, मैनेजर मैडम, रीजनल असिस्टेंट-कम-क्लस्टर हेड तथा अन्य प्रतिष्ठित अतिथि शामिल थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण और डीएवी गान से हुई, जिसमें समारोह की सफलता के लिए ईश्वरीय आशीर्वाद मांगा गया। इसके बाद मंच पर छात्रों की रंगारंग और मनमोहक प्रस्तुतियों ने माहौल जीवंत कर दिया। जीवंत नृत्य, विषय-आधारित प्रस्तुतियों और संगीत के माध्यम से युवा कलाकारों ने अपना आत्मविश्वास, सृजनशीलता और कलात्मक उत्कृष्टता प्रदर्शित की।

"नवांकुर" थीम—नई शुरुआत और युवा मन की खिलती संभावनाओं का प्रतीक—प्रस्तुतियों में खूबसूरती से दर्शाई

गई। प्रस्तुतियों में संस्कृति और देशभक्ति के मूल्यों का प्रतिबिंब देखने को मिला, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

सभा को संबोधित करते हुए प्रिंसिपल श्रीमती रितु दिलबागी ने स्कूल की सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि डीएवी पब्लिक स्कूल छात्रों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास करता है जिससे उनका बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक विकास हो। उन्होंने शिक्षकों के समर्पण और छात्रों की उत्साही भागीदारी की सराहना की, जिनके कारण कार्यक्रम भव्य रूप से सफल रहा।

विशिष्ट अतिथियों ने स्कूल प्रबंधन, शिक्षकों और छात्रों के प्रयासों की सराहना की और प्रतिभागियों को उनकी शानदार प्रस्तुतियों के लिए बधाई देते हुए जीवन के हर क्षेत्र में उत्कृष्टता की ओर बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें प्रबंधन, अभिभावकों और संपूर्ण स्कूल समुदाय के सहयोग को इस यादगार वार्षिक समारोह का हिस्सा बनाने के लिए आभार व्यक्त किया गया।

साइबर लैब को बताया बड़ी पहल

गोरखपुर। चेंम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष संजय सिंघानिया ने मुख्यमंत्री द्वारा मदन मोहन मालवीय फार्मेसी लैब के उद्घाटन पर आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि यह लैब विद्यार्थियों के साथ-साथ व्यापारी समुदाय और आमजन के हित में एक महत्वपूर्ण और स्वागतयोग्य कदम है।

संजय सिंघानिया ने कहा कि वर्तमान समय में साइबर अपराध की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं, ऐसे में यह लैब अपराधियों की पहचान और गिरफ्तारी में अहम भूमिका निभाएगी। उन्होंने इसे व्यापारी वर्ग के लिए "सुरक्षा कवच" बताते हुए कहा कि इससे आमजन को भी साइबर अपराध से बचाव में मदद मिलेगी। उन्होंने मुख्यमंत्री के प्रति विश्वास जताते हुए कहा कि व्यापारी समुदाय उन्हें अपना संरक्षक मानता है और हमेशा उनके साथ खड़ा है।

आगरा दहेज हत्या मामले में बड़ा फैसला: सत्र न्यायालय ने दोनों आरोपियों को किया बरी

साक्ष्यों के अभाव में 498ए, 304बी व वैकल्पिक 302 सहित सभी गंभीर धाराओं से मिली राहत; बचाव पक्ष के अधिवक्ता अरविन्द पुष्कर की प्रभावी पैरवी रही निर्णायक

इस फैसले को न्यायिक प्रक्रिया में साक्ष्य के महत्व और निष्पक्ष सुनवाई के सिद्धांत की पुनः पुष्टि के रूप में देखा जा रहा है।

आगरा, संजय सागर सिंह। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, माननीय अमित कुमार यादव महोदय ने बहुचर्चित दहेज मृत्यु प्रकरण में महत्वपूर्ण निर्णय सुनाते हुए आरोपित सत्येन्द्र सिंह (33 वर्ष) एवं श्रीमती अनीता उर्फ सुनीता (58 वर्ष) को सभी आरोपों से दोषमुक्त कर दिया है। बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता अरविन्द कुमार पुष्कर ने मामले की गंभीरता से पैरवी की।

उनके अनुसार, माननीय न्यायालय ने उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर निष्पक्ष निर्णय देते हुए आरोपियों को राहत प्रदान की। इस फैसले को न्यायिक प्रक्रिया में साक्ष्य के महत्व और निष्पक्ष सुनवाई के सिद्धांत की पुनः पुष्टि के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह फैसला सत्र परीक्षण संख्या-41/2019 एवं संबंधित वादों में सुनाया गया, जिसमें भारतीय दण्ड संहिता की धारा 498ए, 304बी तथा वैकल्पिक धारा 302 के साथ दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धारा 3/4 के तहत आरोप लगाए गए थे। मामला थाना जगदीशपुरा, आगरा के अंतर्गत दर्ज मुकदमा अपराध संख्या-1052/2018 से संबंधित था। न्यायालय ने साक्ष्यों और प्रस्तुत तथ्यों का गहन परीक्षण करने के उपरांत पाया कि अभियोजन पक्ष आरोप सिद्ध करने में सफल नहीं हो सका, जिसके चलते दोनों आरोपियों को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया गया।

अग्रोहा मंडल में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर उत्साह के साथ संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) भारतीय जनता पार्टी द्वारा देशभर में आयोजित किए जा रहे प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला के तहत अग्रोहा मंडल में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। शिविर में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने भाग लेकर पार्टी के सिद्धांतों, नीतियों और संगठनात्मक कार्यप्रणाली का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर का आयोजन अग्रोहा स्थित अग्र विभूति स्मारक में मंडल अध्यक्ष मोहन लाल नंगथला की अध्यक्षता में किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम दिन कार्यकर्ताओं में विशेष उत्साह देखने को मिला और उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर गर्व महसूस किया।

विधानसभा उकलाना के मीडिया प्रभारी जगदीप रेडडू ने जानकारी देते हुए बताया कि शिविर में प्रदेश और जिला स्तर के वरिष्ठ नेताओं ने भाग लेकर कार्यकर्ताओं को संगठन के प्रति समर्पण और सेवा भाव का संदेश दिया। वक्ताओं ने अपने ओजस्वी संबोधन से कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया, जिससे सभी कार्यकर्ता प्रेरित नजर आए।

इस अवसर पर जिला अध्यक्ष डॉ. आशा खेदड़, पूर्व मंत्री अनूप धानक, श्रीनिवास गोयल, रविंद्र रॉकी, अजय धुंधवाल, बहादुर सिंह नंगथला, पियूष महता, नरेश नैन, सतीश पुनिया, कुलदीप किरमारा, अजीत सिवानी, सुशील रेडडू, धर्मवीर जाखड़, जिला महामंत्री युवा मोर्चा हिसार विरेंद्र महता, सुरजमल रेडडू, सुरजमल पुनिया, सुभाष भादू, सतनाम सहित अग्रोहा मंडल के अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शिविर के सफल आयोजन से कार्यकर्ताओं में संगठन के प्रति नई प्रतिबद्धता और जोश देखने को मिला।

वीएमएमसी का सिल्वर जुबली समारोह शुरू: भव्य कर्टेन रेज़र के साथ 25 वर्षों की उपलब्धियों का जश्न

परिवहन विशेष न्यूज

'25 साल—25 आयोजन' थीम के साथ वर्षभर होंगे शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम

नई दिल्ली, 24 मार्च 2026: वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज (VMMC) ने अपने 25 वर्षों के गौरवशाली सफर को मनाने के लिए सिल्वर जुबली समारोह की भव्य शुरुआत कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के साथ की। इस अवसर पर चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और रोगी सेवा के क्षेत्र में संस्थान की उत्कृष्ट उपलब्धियों को याद किया गया और आगामी एक वर्ष तक चलने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

इस गरिमामयी समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अतिरिक्त महानिदेशक स्वास्थ्य सेवाएं (Addl DGHS) डॉ. एल. जी. कृष्णा उपस्थित रहे। कार्यक्रम में वीएमएमसी की निदेशक डॉ. कविता रानी शर्मा, प्राचार्य डॉ. गीतिका खन्ना, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. चारु बंबा सहित संस्थान के पूर्व प्राचार्य, जिनमें संस्थापक प्राचार्य डॉ. जगदीश प्रसाद भी शामिल रहे, वरिष्ठ फैकल्टी, छात्र-छात्राएं और अनेक विशिष्ट अतिथि मौजूद रहे।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण पूर्व प्राचार्यों, संस्थापक सदस्यों और सेवानिवृत्त शिक्षकों का सम्मान समारोह रहा, जिसमें उनके योगदान को सराहा गया। इसके साथ ही गणमान्य अतिथियों द्वारा वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण, विकास और निरंतरता का संदेश दिया गया, जो संस्थान की मूल भावना को दर्शाता है।

इस अवसर पर 'Celebrating 25 Years with 25 Events' थीम के अंतर्गत सिल्वर जुबली अकादमिक कैलेंडर का भी विमोचन किया गया। इस कैलेंडर में आगामी वर्ष के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत योजना

शामिल है। इनमें छात्र-नेतृत्व वाले शैक्षणिक उत्सव, विशेषज्ञ व्याख्यान श्रृंखला, जिसमें 'महिलाएं और चिकित्सा', 'नवाचार' तथा 'समग्र स्वास्थ्य सेवा' जैसे विषय शामिल हैं, प्रमुख रहेंगे। इसके अलावा सामुदायिक सेवा को बढ़ावा देने के लिए रक्तदान शिविर जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे।

सालभर चलने वाले इन आयोजनों का समापन नवंबर में आयोजित होने वाले भव्य दीक्षांत समारोह के साथ होगा। इस अवसर पर एक स्मारक कॉफी टेबल बुक, संस्थान पर आधारित डॉक्यूमेंट्री, स्मृति पट्टिका और संस्थान का आधिकारिक गीत भी जारी किया जाएगा।

डॉ. गीतिका खन्ना के नेतृत्व में तथा वीएमएमसी एलुमनाई एसोसिएशन के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम ने सिल्वर जुबली वर्ष की मजबूत शुरुआत की है। यह आयोजन न केवल संस्थान की अब तक की उपलब्धियों का उत्सव है, बल्कि भविष्य में चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में उत्कृष्टता बनाए रखने के संकल्प को भी दोहराता है।

स्व. डॉ, रामावतार चौहान की पुण्यतिथि के शुभ अवसर पर किया सम्मानित

झरिया, मॉ वत्सला ट्रस्ट की ओर से स्वर्गीय डॉ, रामावतार चौहान की पुण्यतिथि के शुभ अवसर पर सचिव झरीलाल चौहान ,अध्यक्ष अधिवक्ता हिरालाल चौहान,कोषाध्यक्ष किसोर कुमार चौहान ,सह सचिव हेमराज चौहान जी के नेतृत्व मे समाज सेवी, दिपेश चौहान,और समाज सेवी ललीता चौहान जी को वस्त्र और मेमोण्टो दे कर सम्मानित किया गया और साथ मे मेघावी बच्चो को भी मेमोण्टो और फुल देकर सम्मानित करते हुये उज्जवल भविश्य की कामना किया गया।पुन्यतिथि कार्यक्रम मे उपस्थीत चौहान समाज के गन्य माण लोग उपस्थित हुये। जनता मजदुर संध के ऐरीया सचिव अनिल कुमार नोनिया,बी,जे,पी के वरिष्ट नेता संत कुमार चौहान,समाज सेवी प्रकाश चौहान, देश राज चौहान,वंचित मुक्ती मोर्चा के झरखण्ड प्रभारी ,रामा शीष चौहान,मनोज चौहान,शिवनरायण चौहान,सुमित चौहान,सतेन्द्र चौहान,नन्दलाल चौहान,कृष्णा चौहान,सुरेश चौहान,लोकनाथ चौहान,भोला चौहान,अमीत चौहान, ट्रस्ट की ओर से प्रत्येक वर्ष गरीब बच्चो की पढाई और खेल कुद के बिकास के लिये निः शुल्क कोचिंग की व्यवस्था करूंगा जिससे अधिक से अधिक बच्चो को लाभ मिल सके।

प्रभा तिवारी सम्मानित: लव जिहाद व धर्मांतरण के खिलाफ जागरूकता कार्यों को मिला सम्मान

सुनील चिंचोलकर बिलासपुर, छत्तीसगढ़। वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन एवं सर्व युवा ब्राह्मण परिषद छत्तीसगढ़, रायपुर द्वारा आयोजित महिला शिखर सम्मान समारोह में समाजसेवा के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने वाली जिला अध्यक्ष प्रभा तिवारी (वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन, बिलासपुर) को सम्मानित किया गया। उन्हें लव जिहाद एवं धर्मांतरण के विरुद्ध जागरूकता फैलाने तथा समाज को संगठित करने के प्रयासों के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। रायपुर के वृंदावन हॉल में आयोजित इस भव्य समारोह में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाली कुल 33 महिलाओं को स्मृति चिन्ह एवं शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद लक्ष्मी वर्मा, रायपुर महापौर मीनल चौबे, भाजपा प्रवक्ता शताब्दी पांडे, रायपुर की डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस अर्चना झा तथा समग्र शिक्षा जांजगीर की सहायक परियोजना अधिकारी हेमलता शर्मा उपस्थित रहीं। इसके अलावा कार्यक्रम में वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गुणनिधि मिश्रा, युवा अध्यक्ष अविनय दुबे, प्रदेश सलाहकार रज्जन अग्निहोत्री, प्रदेश महासचिव डॉ. सुनील कुमार ओझा, संभागीय अध्यक्ष अजय अवस्थी, प्रदेश अध्यक्ष नितिन कुमार झा एवं प्रदेश सचिव रामवृत तिवारी सहित अनेक गणमान्यजन मौजूद रहे। समारोह में समाज के उत्थान, जागरूकता और संगठन को लेकर विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार भी व्यक्त किए।

आगरा दहेज हत्या मामले में बड़ा फैसला: सत्र न्यायालय ने दोनों आरोपियों को किया बरी

साक्ष्यों के अभाव में 498ए, 304बी व वैकल्पिक 302 सहित सभी गंभीर धाराओं से मिली राहत; बचाव पक्ष के अधिवक्ता अरविन्द पुष्कर की प्रभावी पैरवी रही निर्णायक
इस फैसले को न्यायिक प्रक्रिया में साक्ष्य के महत्व और निष्पक्ष सुनवाई के सिद्धांत की पुन: पुष्टि के रूप में देखा जा रहा है।

आगरा, संजय साग़र सिंह। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, माननीय अमित कुमार यादव महोदय ने बहुचर्चित दहेज मृत्यु प्रकरण में महत्वपूर्ण निर्णय सुनाते हुए आरोपित सत्येन्द्र सिंह (33 वर्ष) एवं श्रीमती अनीता उर्फ सुनीता (58 वर्ष) को सभी आरोपों से दोषमुक्त कर दिया है। बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता अरविन्द कुमार पुष्कर ने मामले की गंभीरता से पैरवी की।

उनके अनुसार, माननीय न्यायालय ने उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर निष्पक्ष निर्णय देते हुए आरोपियों को राहत प्रदान की। इस फैसले को न्यायिक प्रक्रिया में साक्ष्य के महत्व और निष्पक्ष सुनवाई के सिद्धांत की पुनः पुष्टि के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह फैसला सत्र परीक्षण संख्या-41/2019 एवं संबंधित वादों में सुनाया गया, जिसमें भारतीय दण्ड संहिता की धारा 498ए, 304बी तथा वैकल्पिक धारा 302 के साथ दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धारा 3/4 के तहत आरोप लगाए गए थे। मामला थाना जगदीशपुरा, आगरा के अंतर्गत दर्ज मुकदमा अपराध संख्या-1052/2018 से संबंधित था। न्यायालय ने साक्ष्यों और प्रस्तुत तथ्यों का गहन परीक्षण करने के उपरांत पाया कि अभियोजन पक्ष आरोप सिद्ध करने में सफल नहीं हो सका, जिसके चलते दोनों आरोपियों को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया गया।

कक्षा से परे क्षितिजः निरंतर परिवर्तन के युग में शिक्षा

● डॉ. विजय गर्ग

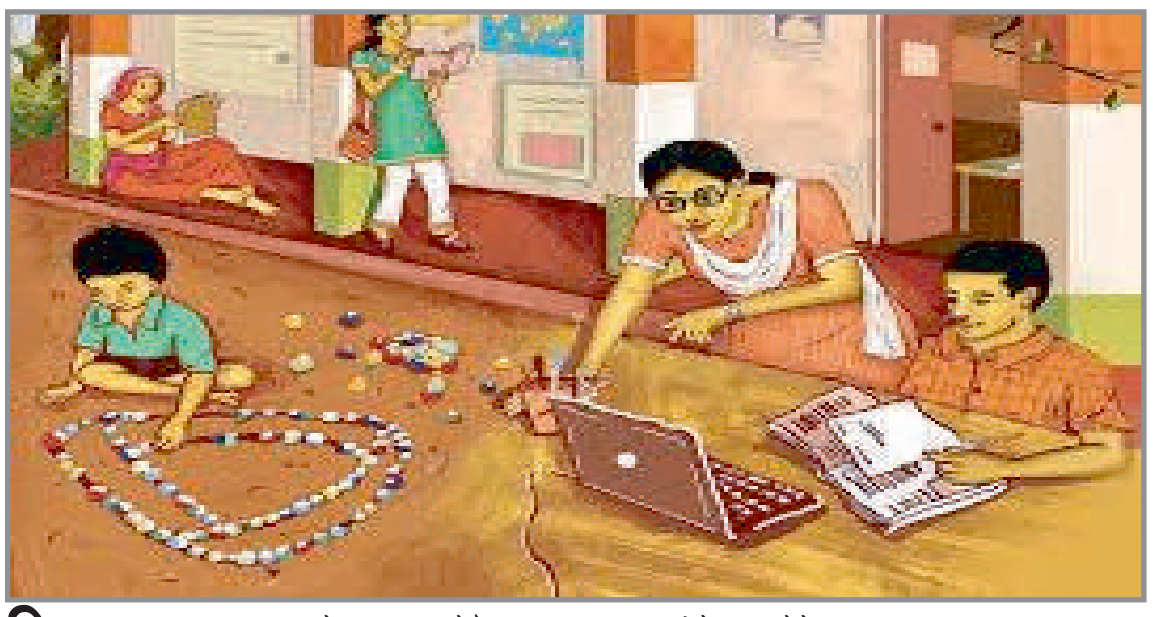

क्रेडेंशियल्स से क्षमताओं की ओर बदलाव दशकों तक, डिग्री रोजगार की प्राथमिक मुद्रा के रूप में कार्य करती थी। हालाँकि, आज नौकरी बाजार में स्थिर योग्यता की अपेक्षा प्रदर्शन योग्य कौशल को प्राथमिकता दी जा रही है। नियोक्ता यह स्वीकार कर रहे हैं कि ऐसे परिदृश्य में जहां उपकरण, सॉफ्टवेयर और उद्योग की मांगें प्रतिवर्ष विकसित होती रहती हैं, एक डिग्री – जबकि आधारभूत – अपने आप में अपर्याप्त है।

शिक्षा का पारंपरिक प्रतिमान—स्कूल से विश्वविद्यालय तक एक रैखिक यात्रा जिसके बाद एक निश्चित कैरियर— तेजी से विघटित हो रहा है। 2026 में, ₹सीखने₹ और ₹करने₹ के बीच की सीमा छिद्रपूर्ण हो गई है। जैसे-जैसे तकनीकी उन्नति की गति बढ़ती है, शिक्षा अब युवाओं का अंतिम चरण नहीं बल्कि एक निरंतर, आजीवन अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। क्रेडेंशियल्स से क्षमताओं की ओर बदलाव दशकों तक, डिग्री रोजगार की प्राथमिक मुद्रा के रूप में कार्य करती थी। हालाँकि, आज नौकरी बाजार में स्थिर योग्यता की अपेक्षा प्रदर्शन योग्य कौशल को प्राथमिकता दी जा रही है। नियोक्ता यह स्वीकार कर रहे हैं कि ऐसे परिदृश्य में जहां उपकरण, सॉफ्टवेयर और उद्योग की मांगें प्रतिवर्ष विकसित होती रहती हैं, एक डिग्री — जबकि आधारभूत — अपने आप में अपर्याप्त है। आधुनिक शिक्षार्थी अब यह खोज रहा हैः सूक्ष्म-प्रमाणपत्र और नैनो-डिग्रीः लघु-रूप, स्टैकेबल शिक्षण मॉड्यूल जो उभरते क्षेत्रों में लक्षित विशेषज्ञता प्रदान करते हैं। कौशल-प्रथम पोर्टफोलियोः रोट-आधारित परीक्षण के बजाय लाइव परियोजनाओं, प्रोटोटाइप और वास्तविक दुनिया की समस्या समाधान पर आधारित मूल्यांकन की दिशा में एक कदम। अनुप्रयुक्त शिक्षाः इंटर्नशिप, प्रशिक्षुता और सहयोगात्मक उद्योग परियोजनाओं का सीधे सीखने के अनुभव में एकीकरण, सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावसायिक उपयोगिता के बीच की खाई को कम करना। एआई निजीकरण के लिए उत्प्रेरक है कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक नवीन उपकरण से इस शैक्षिक परिवर्तन की रीढ़ बन गई है। वास्तविक समय में सीखने के पैटर्न, जुड़ाव स्तर और निपुणता का विश्लेषण करके, एआई ₹एक-आकार-सभी₹ मॉडल को खत्म कर रहा है जिसने 20वीं सदी की स्कूली शिक्षा को परिभाषित किया था। अनुकूली पथः व्यक्तिगत एआई-संचालित पाठ्यक्रम किसी व्यक्ति की गति और शैली के अनुसार विषय-वस्तु को समायोजित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि शिक्षार्थी विकास की आवश्यकता वाले क्षेत्रों में समय बिताएं, जबकि मास्टर अवधारणाओं के माध्यम से तेजी लाएं। 24/7 मार्गदर्शनः आभासी सहायक और बुद्धिमान ट्यूशन प्रणालियां मांग पर सहायता प्रदान करती हैं, जिससे पारंपरिक स्कूल घंटों की सीमाओं से बाहर भी संदेह दूर किया जा सकता है। स्वचालित व्यवस्थापक, मानव कनेक्शनः ग्रेडिंग, शेड्यूलिंग और पाठ्यक्रम मानचित्रण को संभालकर, एआई शिक्षकों को अपनी सबसे आवश्यक भूमिकाओं के लिए समय पुनः प्राप्त करने की अनुमति देता हैः मार्गदर्शन, सामाजिक-भावनात्मक समर्थन, और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना। नया अनिवार्यः आजीवन चपलता डिजिटल उपकरणों और संरचनात्मक बदलावों के अलावा, 2026 में सबसे महत्वपूर्ण विकास मानसिकता में परिवर्तन है। भविष्य ₹आजीवन सीखने वाले₹ व्यक्ति का है। वह व्यक्ति जो शिक्षा को एक अनंत खेल के रूप में देखता है। यह लचीलापन इस पर आधारित है कठिन परिसंपत्तियों के रूप में सॉफ्ट स्किल्सः जैसे-जैसे तकनीकी कार्य तेजी से स्वचालित होते जा रहे हैं, मानव-केंद्रित कौशल—भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जटिल समस्या-समाधान, रचनात्मकता और अनुकूलनशीलता〉 सबसे टिकाऊ प्रतिस्पर्धी लाभ बनते जा रहे हैं। अंतःविषय जिज्ञासाः विभिन्न क्षेत्रों में बिंदुओं को जोड़ने की क्षमता तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही है। नवाचार शायद ही कभी साइलो में होता है, और सबसे सफल पेशेवर वे होते हैं जो प्रौद्योगिकी, मानविकी, विज्ञान और कला से ज्ञान का मिश्रण करते हैं। सक्रिय पुनर्प्रशिक्षणः व्यावसायिक कौशल का अर्ध-आयु कम होने के साथ, सीखने और पुनः सीखने की क्षमता कैरियर दीर्घायु का अंतिम संकेत बन गई है। अपनी ₹शिक्षा₹ पूरी करने का युग समाप्त हो गया है। हम सतत विकास के युग में प्रवेश कर चुके हैं, जहां जिज्ञासु, फुर्तीला और व्यस्त रहने की क्षमता ही अप्रत्याशित भविष्य के लिए एकमात्र विश्वसनीय दिशा-निर्देश है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में रहना

डॉ विजय गर्ग

21वीं सदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के उदय से पहले किसी भी तरह का परिवर्तन हो रहा है। एक समय विज्ञान कथा तक सीमित अवधारणा, एआई अब रोजमर्रा की जिंदगी का एक अभिन्न अंग बन गया है। स्मार्टफोन और वर्चुअल असिस्टेंट से लेकर स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक, हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में रह रहे हैं, जहां मशीनें सिर्फ उपकरण नहीं बल्कि मानव प्रगति में सक्रिय भागीदार हैं।

एआई ने चुपचाप खुद को हमारी दैनिक दिनचर्या में शामिल कर लिया है। जब हम सबसे तेज मार्ग खोजने के लिए नेविगेशन ऐप्स का उपयोग करते हैं, स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर व्यक्तिगत सिफारिशें प्राप्त करते हैं, या ग्राहक सेवा के लिए चैटबॉट्स के साथ बातचीत करते हैं, तो हमें एआई-संचालित प्रणालियों से लाभ होता है। ये प्रौद्योगिकियां डेटा से सीखती हैं, उपयोगकर्ता के व्यवहार के अनुकूल होती हैं और लगातार सुधार करती हैं, जिससे जीवन अधिक सुविधाजनक और कुशल हो जाता है।

एआई का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव शिक्षा में देखा जा सकता है। बुद्धिमान ट्यूशन प्रणालियां और व्यक्तिगत शिक्षण मंच छात्रों के सीखने के तरीके को बदल रहे हैं। एआई किसी छात्र की ताकत और कमजोरियों को पहचान सकता है, तथा उसे अनुरूप मार्गदर्शन और सहायता प्रदान कर सकता है। इससे न केवल सीखने के परिणाम बेहतर होते हैं, बल्कि शिक्षा को अधिक समावेशी और सुलभ भी बनाया जाता है।

स्वास्थ्य सेवा में, एआई निदान और उपचार में क्रांति ला रहा है। उन्नत एल्गोरिदम चिकित्सा डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं, प्रारंभिक अवस्था में बीमारियों का पता लगा सकते हैं, तथा डॉक्टरों को सटीक निर्णय लेने में सहायता कर सकते हैं। संभावित स्वास्थ्य जोखिमों की भविष्यवाणी करने से लेकर जटिल सर्जरी का समर्थन करने तक, एआई चिकित्सा देखभाल की गुणवत्ता और गति दोनों में सुधार कर रहा है, जिससे अंततः जीवन बचता है।

कार्यस्थल में भी गहरा परिवर्तन हो रहा है। एआई द्वारा संचालित स्वचालन, बार-बार होने वाले और समय लेने वाले कार्यों को अपने नियंत्रण में ले रहा है, जिससे मनुष्य रचनात्मकता, समस्या समाधान और नवाचार पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। हालांकि यह बदलाव नौकरी विस्थापन के बारे में चिंता पैदा करता है, लेकिन इससे डेटा विज्ञान, मशीन लर्निंग और एआई नैतिकता जैसे क्षेत्रों में भी नए अवसर पैदा होते हैं।

हालाँकि, एआई के युग में जीवन चुनौतियों से रहित नहीं है। डेटा गोपनीयता, एल्गोरिदमिक पूर्वाग्रह और नैतिक चिंताओं जैसे मुद्दे तेजी से महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। मशीनों के पास कितना नियंत्रण होना चाहिए और यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि वे मानवता के सर्वोत्तम हित में कार्य करें, यह प्रश्न वैश्विक बहस का विषय बना हुआ है। इसके अलावा, प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता से आलोचनात्मक सोच और पारस्परिक संचार जैसे मानवीय कौशल कम हो सकते हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू मानव संबंधों और समाज पर प्रभाव है। जैसे-जैसे एआई प्रणालियां संचार में अधिक मानवीय हो जाती हैं, लोग मित्रता या निर्णय लेने के लिए उन पर निर्भर रहना शुरू कर देते हैं। हालांकि यह कुछ संदर्भों में लाभदायक हो सकता है, लेकिन इससे भावनात्मक निर्भरता और वास्तविक मानवीय संबंधों के क्षरण की चिंता भी उत्पन्न होती है।

इन चुनौतियों के बावजूद, एआई में सकारात्मक परिवर्तन की अपार संभावनाएं हैं। यह जलवायु परिवर्तन, संसाधन प्रबंधन और आपदा प्रतिक्रिया जैसे वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने में मदद कर सकता है। विशाल मात्रा में डेटा का विश्लेषण करके, एआई ऐसी अंतर्दृष्टि और समाधान प्रदान कर सकता है जो पहले मानव क्षमता से परे थे।

निष्कर्षतः, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में जीवन अवसर और जिम्मेदारी का मिश्रण है। चूंकि एआई का विकास जारी है, इसलिए व्यक्तियों, सरकारों और संगठनों के लिए इसका बुद्धिमानी और नैतिक तरीके से उपयोग करना आवश्यक है। भविष्य का आकार केवल मशीनों से नहीं होगा, बल्कि इस बात से होगा कि मनुष्य किस प्रकार उनका मार्गदर्शन करेगा और उनके साथ सह-अस्तित्व बनाएगा। मानवीय मूल्यों को संरक्षित करते हुए एआई का उपयोग करना एक संतुलित और टिकाऊ विश्व के निर्माण की कुंजी होगी।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

मोदी युग में भारत वाकई बदला, मगर गया तो पीछे!

(आलेख : राजेंद्र शर्मा)

आखिरकार, प्रधानमंत्री मोदी ने एक नया रिकार्ड कायम कर लिया। मोदी के शीर्ष मंत्रिमंडलीय साथियों की प्रशस्तियों से पूरे देश को यह रिकार्ड बनने का पता चला। यह रिकार्ड है देश में सबसे लंबे समय तक सार्वजनिक पद (वास्तव में मुख्यमंत्री तथा प्रधानमंत्री जैसे शीर्ष पद) पर रहने का। इस 22-23 मार्च को नरेंद्र मोदी को उच्च सार्वजनिक पदों पर रहते हुए 8,931 दिन हो गए। इसके साथ ही नरेंद्र मोदी ने पवन चामलिंग का रिकार्ड तोड़ दिया, जो 24 वर्ष तक सिक्किम के मुख्यमंत्री रहे थे। पवन चामलिंग का मुख्यमंत्री का कार्यकाल, 8,930 दिन का ही था।

नरेंद्र मोदी ने 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री का पद संभाला था और 2014 की 26 मई से प्रधानमंत्री के पद पर हैं। और नरेंद्र मोदी ने मुख्यमंत्री के पद पर रहकर गुजरात को और प्रधानमंत्री के पद पर रहकर देश को जिस दिशा में आगे बढ़ाया है, उसमें बहुत ही मुखर निरंतरताएं हैं। इसलिए, इस रिकार्ड के बहाने 24 वर्ष के नरेंद्र मोदी के इस पूरे कार्यकाल की ही, जिसे 'सेवा' का रिकार्ड बताने पर मोदी के मंत्रिमंडलीय साथियों का खास जोर रहा है, कुछ विशेषताओं को यहां रेखांकित करना अनुपयुक्त नहीं होगा।

मोदी के बाद नंबर दो माने जाने वाले, अमित शाह ने गोल-मोल प्रशस्तियों को दोहराने के साथ ही, इनसे कुछ आगे भी जाने की कोशिश की है। यह कहने के बाद कि 'सेवा के मोदीजी के दशक अपना ही एक युग बन गए हैं', शाह एक्स पर अपनी पोस्ट में इस युग में हुए मुख्य बदलाव भी गिनाते हैं। 'चाहे गरीबों को उनके अधिकार देना हो, चाहे विकास के नये मानक कायम करना हो या वैश्विक मंचों पर राष्ट्र का गौरव बढ़ाना हो, मोदी युग ने भारत को इतना बदल दिया है कि इसको पहचानना ही मुश्किल है।' शाह ने अपने बयान के आखिर में संभवतः अनजाने में जिस एक बड़ी सच्चाई को उगल दिया है, उससे हम भी पूरी तरह सहमत हैं। वाकई 'मोदी युग ने भारत को इतना बदल दिया है कि इसको पहचानना ही मुश्किल है।' आइए, अब जरा इस पर भी तो नजर डाल लें कि मोदी युग ने भारत को किस तरफ इतना बदला है कि पहचान में ही नहीं आता है।

मोदी युग के भारत की बदली हुई पहचान का एक पहलू, सचमुच खुद को भारतीय मानने वाले हर देशवासी को जरूर चुभा होगा। अभी गुजरी ईद पर एक ओर तो प्रधानमंत्री ने अपनी मुबारकबाद दी और दूसरी ओर इसी के ईद-गिर्द कम से कम पांच खबरें बिना किसी प्रयास के स्मृति में गढ़ी रह गयीं। पहली खबर प्रधानमंत्री के संसदीय क्षेत्र वाराणसी से थी, जहां गंगा में एक नाव पर रोजा-इफ्तार करने के लिए, 14 मुस्लिम नौजवानों को शुरूआती तौर पर 14 दिन के लिए जेल भेज दिया गया। भाजपा युवा मोर्चा के एक नेता की शिकायत पर पहले गंगा पर नाव में बिरयानी खाकर धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचाने का आरोप लगाया गया, फिर बिरयानी खाकर 'हड्डियां गंगा में डालने का और अंत में मल्लाह की नाव जबरन छीनकर ले जाने का।

इसी के पीछे-पीछे दूसरी खबर आई, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ के क्षेत्र गोरखपुर से। यहां पुलिस ने एक खुली जगह पर इफ्तार करने के बाद, चार नौजवानों को गिरफ्तार कर लिया। उन पर आरोप लगाया गया कि उन्होंने बिरयानी खाकर, 'हड्डियां एक नाले में डाल दी थीं। नाला एक मंदिर के करीब था और मंदिर के पुजारी की शिकायत थी कि बिरयानी की 'हड्डियां डालकर, उस नाले का पानी दूषित कर दिया गया, जिस नाले से मंदिर के लोग पानी पीते थे, जिस पानी में खाना बनाते थे और जिस पानी से देव प्रतिमाओं को स्नान कराते थे!

जरा और बाद में उत्तर प्रदेश में ही मैनपुरी में तथा एक अन्य जगह से, पुलिस अधिकारियों के ईद पर सामूहिक नमाज के लिए इकट्ठे हुए लोगों को अकारण धमकाने-धौंस देने के वीडियो वायरल हुए। पांचवीं खबर, राजधानी दिल्ली में उत्तम नगर से थी, जहां उच्च न्यायालय के आदेश पर पुलिस की बहुत भारी तैनाती के बाद और दर्जनों की गड़बड़ी फैलाने की कोशिश के लिए गिरफ्तारी के बाद, ईद का शांति से निकल जाना, सब के लिए राहत की एक बड़ी खबर बन गया। हिंदुत्ववादी योद्घा लगातार यहां ईद पर खून बहाने की धमकियां दे रहे थे। याद रहे कि यह तो सिर्फ बानगी है। अल्पसंख्यकों के धार्मिक त्यौहारों को तथाकथित हिंदुत्ववादियों द्वारा झगड़े और इकतरफा पुलिस-प्रशासनिक कार्रवाइयों का मौका बनाया जाना, मोदी युग के भारत में जैसे नियम ही बन चुका है। इससे पहले, क्रिसमस पर भी जगह-जगह हमलों तथा गड़बड़ी की खबरें आई थीं। मोदी युग में अल्पसंख्यकों में मुसलमान खासतौर पर निशाने पर हैं, लेकिन ईसाई और यहां तक कि सिख, जैन तथा बौद्घ भी, सुरक्षित कोई नहीं है।

मोदी युग में वक्त के साथ सांप्रदायीकरण का यह खेल ज्यादा से ज्यादा बढ़ता तथा ज्यादा से ज्यादा खुलेआम ही होता गया है। इसी क्रम में 2024 के आम चुनाव के समय से, खुलेआम मुस्लिमविरोधी दुहाई का सहारा लेने को नरेंद्र मोदी ने खुद ही अपना प्रमुख हथियार बना लिया है। अपनी मुस्लिमविरोधी पहचान को स्थापित करने के लिए वह पहले 'तुष्टिकरण'-विरोध की जिस शब्दावली का सहारा लेते थे, उसे छोड़कर अब उन्होंने 'घुसपैठियों' के खतरे की शब्दावली को पकड़ लिया है। विशेष रूप से झारखंड, एक हद तक महाराष्ट्र और पिछले ही दिनों बिहार के चुनाव में 'घुसपैठियों के खतरे' के नारे को जमकर भुनाने के बाद, अब खासतौर पर असम तथा प. बंगाल के चुनाव में संघ-भाजपा सबसे ज्यादा इसी नारे के सहारे हैं। नतीजा यह है कि इन चुनावों में खुद भाजपा के अपने अल्पसंख्यक मोर्चे के नेता तक बिल्कुल बेरोजगार हैं – चुनाव में उनकी उपस्थिति तो उनके मुस्लिम-विरोधी तेवर को कमजोर जो कर देगी। सच है कि मोदी युग ने भारत को इतना बदल दिया है कि उसे पहचानना ही मुश्किल हो गया है। पहले भी सांप्रदायिक ताकतें हुआ करती थीं, सांप्रदायिक गबड़बड़ियां भी हुआ करती थीं, शासन के आचरण में भी थोड़ा-बहुत पक्षपात भी हो सकता था, लेकिन शासन और राज्य की मुद्रा आमतौर पर निष्पक्ष होती थी।

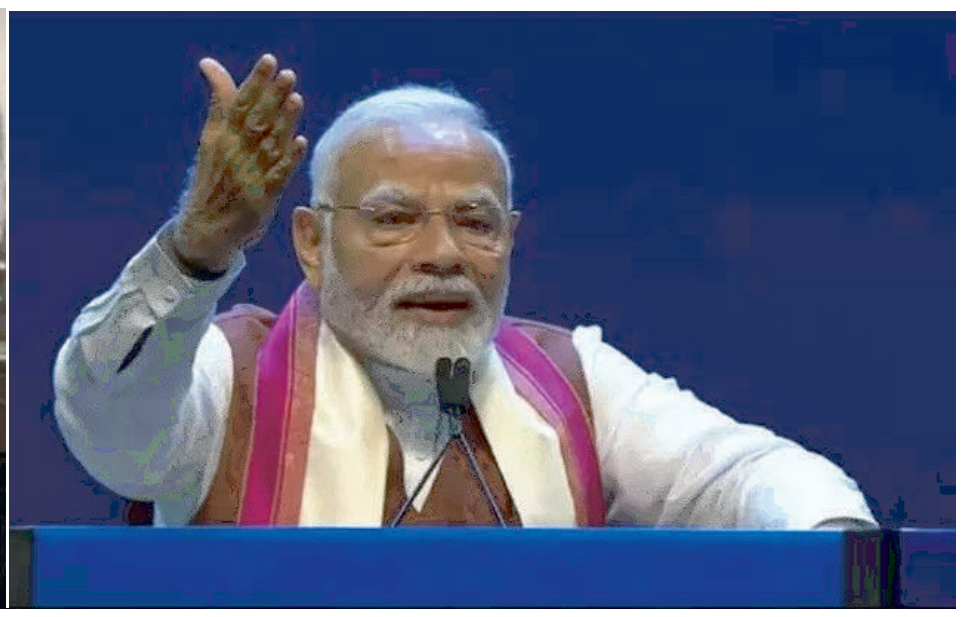

यह बढ़ता सांप्रदायीकरण, मौजूदा सत्ताधारियों द्वारा सचेत रूप से फैलाया जा रहा है और राजसत्ता समेत सभी उपलब्ध औजारों का इस्तेमाल कर के फैलाया जा रहा है। राजसत्ता के समाज के संप्रदायीकरण के लिए सुनियोजित इस्तेमाल का इतिहास, उस मोदी युग जितना ही पुराना है, जिसकी बात अमित शाह करते हैं। मुख्यमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी के गुजरात में सत्ता संभालने के चंद महीनों में ही, गुजरात का 2002 का कुख्यात दंगा हो चुका था, जो वास्तव में प्रशासन की शह से, संघ परिवार द्वारा अंजाम दिया गया, मुस्लिमविरोधी नरसंहार ही था। इसके कुछ ही महीने बाद, इस नरसंहार को ही अपना शुभंकर बनाकर नरेंद्र मोदी ने चुनाव में भाजपा को जीत दिलायी और तब तक गुटों में बंटी रही गुजरात भाजपा में अपनी स्थिति सबसे मजबूत कर ली।

मोदी युग में वक्त के साथ सांप्रदायीकरण का यह खेल ज्यादा से ज्यादा बढ़ता तथा ज्यादा से ज्यादा खुलेआम ही होता गया है। इसी क्रम में 2024 के आम चुनाव के समय से, खुलेआम मुस्लिमविरोधी दुहाई का सहारा लेने को नरेंद्र मोदी ने खुद ही अपना प्रमुख हथियार बना लिया है। अपनी मुस्लिमविरोधी पहचान को स्थापित करने के लिए वह पहले 'तुष्टिकरण'-विरोध की जिस शब्दावली का सहारा लेते थे, उसे छोड़कर अब उन्होंने 'घुसपैठियों' के खतरे की शब्दावली को पकड़ लिया है।

विशेष रूप से झारखंड, एक हद तक महाराष्ट्र और पिछले ही दिनों बिहार के चुनाव में 'घुसपैठियों के खतरे' के नारे को जमकर भुनाने के बाद, अब खासतौर पर असम तथा प. बंगाल के चुनाव में संघ-भाजपा सबसे ज्यादा इसी नारे के सहारे हैं। नतीजा यह है कि इन चुनावों में खुद भाजपा के अपने अल्पसंख्यक मोर्चे के नेता तक बिल्कुल बेरोजगार हैं — चुनाव में उनकी उपस्थिति तो उनके मुस्लिम-विरोधी तेवर को कमजोर जो कर देगी। सच है कि मोदी युग ने भारत को इतना बदल दिया है कि उसे पहचानना ही मुश्किल हो गया है। पहले भी सांप्रदायिक ताकतें हुआ करती थीं, सांप्रदायिक गबड़बड़ियां भी हुआ करती थीं, शासन के आचरण में भी थोड़ा-बहुत पक्षपात भी हो सकता था, लेकिन शासन और राज्य की मुद्रा आमतौर पर निष्पक्ष होती थी। यहां तक कि प्रधानमंत्री की हैसियत से अटल बिहारी वाजपेयी ने भी 2002 के नरसंहार के बाद मुख्यमंत्री की हैसियत से नरेंद्र मोदी को उनका यही 'राजधर्म' याद दिलाया था। पर मोदी युग में, सांप्रदायिक भेदभाव ही राजधर्म है!

मोदी युग में कुछ और भी बदला है, जिसने उस भारत को पहचानना मुश्किल बना दिया है, जिसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ 100 साल से ज्यादा लड़कर, आजादी हासिल की थी। इस लड़ाई से बनी इस देश की अपनी पहचान को ही इस मोदी युग ने जिस हिकारत से साथ बदला है, उसका जिक्र हम जरा और आगे करेंगे। पहले, इस लड़ाई से निकली आम जनता यानी किसान, मजदूर, कर्मचारी, छोटे व्यवसायी आदि की केंद्रीयता की याद दिला दें, जिसे मोदी युग में पूरी तरह से गायब ही कर दिया गया है।

बेशक, आजादी की लड़ाई की राष्ट्रवाद की कल्पना में, देसी पूंजीपतियों की भी जगह थी और स्वतंत्र भारत में अपनायी गयी विकास की नीति में, उन्हें महत्वपूर्ण भूमिका दी गयी थी, हालांकि राजकीय क्षेत्र की भूमिका को उसके ऊपर रखा गया था। धीरे-धीरे पूंजीवादी क्षेत्र की जगह बढ़ती भी गयी। फिर भी शासन की भूमिका आम तौर पर आम लोगों यानी किसानों, मजदूरों व अन्य मेहनत करने वालों के पक्ष में संतुलन को रखने की ही रही।

नब्बे के दशक के आरंभ में नव-उदारवाद के आने के साथ, शासन के लिए औपचारिक रूप से आम लोगों की इस केंद्रीयता को जैसे छोड़ ही दिया और आम लोगों के हितों को, हाशिए के बचाव उपायों तक सीमित कर दिया गया। फिर भी पूंजीवादी क्षेत्र को बढ़ावा देने के बावजूद, शासन या राज्य और उसके बीच एक अंतर बना रहा। बहरहाल, मोदी युग में यह अंतर ही मिटा दिया गया है और सत्ता पर सीधे सांप्रदायिक-कारपोरेट गठजोड़ का कब्जा करा दिया गया है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में मोदी युग के साथ ही इसकी भी शुरूआत हुई थी, जो बाद में 2013 में नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री के पद के लिए संघ-भाजपा के उम्मीदवार से पहले, कारपारेटों के लगभग सर्वसम्मत उम्मीदवार के रूप में प्रमोट किए जाने में अपने उत्कर्ष पर पहुंची।

और मोदी के प्रधानमंत्रित्व में, शासन द्वारा खुले आम और देश व आम जनता के हितों की कीमत पर चहेते कारपोरेटों को आगे बढ़ाए जाने में तो इसे चरमोत्कर्ष पर ही पहुंचा दिया गया। संयोग ही नहीं है कि संघ-भाजपा के लिए धन्ना-सेठों ने भी अपनी तिजोरियों के दरवाजे पूरे खोल दिए हैं, जिसमें मुख्यधारा के मीडिया की सेवाएं भी शामिल हैं। सांप्रदायिक तुरुप के साथ, यह गठजोड़ भी संघ-भाजपा की और उसमें भी खासतौर पर मोदी और उनकी मंडली की ताकत, बल्कि अजेयता का, सबसे बड़ा स्रोत है। जाहिर है कि मोदी युग से पहले भारत ऐसा कभी नहीं था।

और आखिर में वह, जो आज सबसे ज्यादा सामने है। ईरान पर अमेरिका-इजरायल के अकारण और वास्तव में बातचीत के बीच में होने के चलते विश्वासघाती हमले पर, मोदी युग के भारत की चुप्पी ने भारत की उस पहचान को पूरी तरह से ही त्याग दिया है, जो हमारी साम्राज्यवादविरोधी आजादी की लड़ाई से बनी थी। भारत आज अगर किसी के साथ है तो, एक स्वतंत्र देश की संप्रभुता के हरण के साम्राज्यवादी हमले के साथ है! यह, वेनेजुएला के मामले में और क्यूबा के मामले में भी चुप्पी से भी आगे का मामला है। मोदी युग ने वाकई भारत को ऐसे बदल दिया है कि पहचानना ही मुश्किल है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और साप्ताहिक पत्रिका 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

माकपा की 'जन आक्रोश रैली' में उमड़ा जनसैलाब ; मोदी सरकार की नीतियों के खिलाफ संघर्ष तेज करने

(संजय पराते की रिपोर्ट)

नयी दिल्ली, 25 मार्च। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) ने केंद्र सरकार की कथित जनविरोधी नीतियों के विरोध में कल मंगलवार को रामलीला मैदान में एक विशाल 'जनाक्रोश' रैली का आयोजन किया, जिसमें बड़े पैमाने पर लोगों ने हिस्सा लिया।

इस रैली में देश के विभिन्न हिस्सों, विशेषकर हिंदी भाषी राज्यों से आए हजारों खेत मजदूरों, किसानों और मजदूरों ने केंद्र की मोदी सरकार की नीतियों, महंगाई, बेरोजगारी और नए श्रम कानूनों के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। रैली में छत्तीसगढ़ से भी हजारों लोगों ने भाग लिया

इस असवर पर माकपा महासचिव एम. ए. बेबी ने रैली को संबोधित करते हुए कहा कि रामलीला मैदान में उमड़ा यह विशाल जनसैलाब मेहनतकश जनता के बढ़ते असंतोष का प्रतीक है। उन्होंने रैली की सफलता के लिए कार्यकर्ताओं को बधाई देते हुए आह्वान किया कि आने वाले दिनों में इस संघर्ष को और अधिक व्यापक और तेज करें। माकपा नेता ने कहा कि लाल झंडा कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे मिटाया जा सके ; यह लोगों के संघर्षों का प्रतीक है। जहाँ भी लोग खड़े होंगे, लाल झंडा बुलंद होगा। बेबी ने कहा, ₹हमारा काम सिर्फ़ भाषण देने तक ही सीमित नहीं है। हम मज़दूरों, किसानों, खेतिहर मज़दूरों, छात्रों, महिलाओं, युवाओं, दलितों और पिछड़े समुदायों से जुड़ते हैं। हम उनकी चिंताओं को सुनते हैं।

रैली में दूसरे वक्ताओं ने रसोई गैस की कमी, कमरतोड़ महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर सरकार को घेरा। पार्टी नेताओं ने आरोप लगाया कि भारत सरकार साम्राज्यवादी अमेरिका के दबाव में झुक रही है, जिससे देश के हितों को नुकसान पहुँच रहा है। इस अवसर पर अमेरिका इजरायल धुरी द्वारा ईरान के खिलाफ पर एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पारित किया गया, जिसमें साम्राज्यवादी ताकतों की आक्रामक नीतियों की कड़ी निंदा की गई।

रैली को पार्टी के पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड तपन सेन, विजू कृष्णन, अमरा राम, अशोक धवले और मरियम धवले सहित केंद्रीय कमेटी के कई दिग्गज नेताओं ने संबोधित किया। नेताओं ने एकजुट होकर सरकार की नीतियों के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ने की जरूरत पर जोर दिया।

यह रैली पूरे भारत में पार्टी के व्यापक जनसंपर्क अभियान के समापन का भी अवसर थी। जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार और झारखंड सहित कई राज्यों में 33 जन आक्रोश जत्थों के समापन के अवसर पर यह रैली आयोजित की गयी थी।

माकपा ने चार श्रम संहिताओं (लेबर कोड्स) से जुड़ी अधिसूचना को वापस लेने और हाल ही में लागू किए गए 'विकसित भारत-रोज़गार और आजीविका गारंटी मिशन (ग्रामीण) अधिनियम' को रद्द करने की माँग की है। जनाक्रोश रैली में कहा गया कि बिजली अधिनियम में संशोधन नहीं किया जाना चाहिए और डिस्कॉम का निजीकरण नहीं होना चाहिए। माकपा ने बीज विधेयक में संशोधन का भी विरोध किया।

रैली की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि विभिन्न राज्यों से कार्यकर्ता और समर्थक दो दिन पहले ही दिल्ली पहुंचना शुरू हो गए थे। मंगलवार सुबह तक पूरा रामलीला मैदान लाल झंडों और सरकार विरोधी नारों से पट गया था।

माकपा ने स्पष्ट किया है कि यह रैली केवल एक पड़ाव है और मजदूरों-किसानों की यह एकजुटता भविष्य में और बड़े आंदोलनों का रूप लेगी।

(रिपोर्टर छत्तीसगढ़ माकपा के राज्य सचिवमंडल के सदस्य हैं।)

संस्कार और तकनीक के मेल से युवाओ को मिलेगी नई दिशा-अजीत तेवतिया

परिवहन विशेष न्यूज

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की तरफ़ से विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी में बुजुर्गों और युवाओं में तालमेल कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।इस मौक़े पर मुख्य अतिथि कुलपति दिनेश अग्रवाल विशिष्ठ अतिथि संतेंद्र सौरौत मंत्रालय से रिसर्च अधिकारी तान्या सेन गुप्ता कॉडिनेटर चंचल भारद्वाज सुनील शर्मा रहे

इस अवसर पर मंत्रालय के सदस्य और मुख्य वक्ता अजीत तेवतिया ने संबोधन में बताया की

अक्सर कहा जाता है "एक बुजुर्ग का घर में होना, घर में एक जीवित पुस्तकालय होने जैसा है।₹ हमारे वरिष्ठ नागरिक केवल बीते हुए कल का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वे हमारे आज के मार्गदर्शक और भविष्य की नींव हैं। मंत्रालय का हमेशा यह उद्देश्य रहा है कि हम एक ऐसा समाज बनाएं जहाँ उम्र का अंतर दूरियों में न बदले। इसी सोच के साथ हमने:

"पीढ़ीगत संबंधों का उत्सव" जैसे कार्यक्रम शुरू किए हैं, ताकि युवा और बुजुर्ग एक-दूसरे के अनुभवों को साझा कर सकें।

"आराधना" जैसे सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से हमने कला और संस्कृति के धागे से इन दोनों पीढ़ियों को पिरोने का प्रयास किया है।

युवाओं और वरिष्ठों का साथ क्यों जरूरी है?

संस्कार और तकनीक का मेलः जहाँ हमारे युवाओं के पास आधुनिक तकनीक और नई ऊर्जा है, वहीं हमारे बुजुर्गों के पास जीवन का वह गहरा अनुभव है जिसे किसी किताब से नहीं सीखा जा सकता।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में अकेलापन एक बड़ी चुनौती है। जब एक छात्र किसी वरिष्ठ नागरिक के साथ समय बिताता है, तो छात्र को संबल मिलता है और बुजुर्ग को अपनेपन का अहसास।

मंत्रालय का संकल्प

हमारा मंत्रालय केवल पेंशन या स्वास्थ्य सुविधाओं तक सीमित नहीं है। हम चाहते हैं कि समाज में 'सम्मान' और 'संवाद' की संस्कृति बनी रहे। ₹आराधना₹ जैसे कार्यक्रम हमें याद दिलाते हैं कि हमारी जड़ें (वरिष्ठ नागरिक) जितनी मजबूत होंगी, हमारी शाखाएं (युवा) उतनी ही ऊँची उड़ान भर सकेंगी। हमे अपने व्यस्त समय में से कुछ पल अपने घर और आस-पड़ोस के बुजुर्गों के लिए निकालें। आपका थोड़ा सा समय उनके चेहरे पर मुस्कान ला सकता है, और उनकी एक दुआ आपका जीवन बदल सकती है।

आइए, हम सब मिलकर एक ऐसे भारत का निर्माण करें जहाँ हर पीढ़ी दूसरी पीढ़ी के साथ कंधे से कंधा मिला कर चले ।

एआई से बाल साहित्य होगा अधिक रोचक व संवादात्मक : सुषमा सिंह

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली,25 मार्च। स्व. कृष्ण कुमार अष्ठाना की स्मृति में मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी एवं मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् (संस्कृति विभाग) द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी "गली बचपन की" श्यामला हिल्स भोपाल में सम्पन्न हुई। देशभर से आए साहित्यकारों, शिक्षकों, संपादकों एवं शोधार्थियों की सक्रिय सहभागिता ने आयोजन को राष्ट्रीय स्तर का महत्वपूर्ण मंच बना दिया।

संगोष्ठी का आयोजन डॉ. विकास दवे के निर्देशन में हुआ, जबकि संयोजन 'देवपुत्र' के संपादक गोपाल महेश्वरी ने किया। बाल साहित्य शोध सृजन पीठ की निदेशक डॉ. मीनू पांडे 'नयन' सहित अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों की गरिमामयी उपस्थिति रही। दो दिवसीय इस संगोष्ठी में 11 सत्रों के अंतर्गत 10 प्रमुख विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। 51 वक्ताओं सहित 71 साहित्यकारों ने बाल साहित्य के विविध आयामों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर 20 पुस्तकों एवं 'राष्ट्र समर्पण' पत्रिका का लोकार्पण भी किया गया।

संगोष्ठी में अपने व्यक्तव्य में दिल्ली की वरिष्ठ साहित्यकार सुषमा सिंह ने एआई की भूमिका" विषय पर कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) बाल साहित्य के लिए एक नया सृजनात्मक आयाम प्रस्तुत कर रही है। इसके माध्यम से वैज्ञानिक तथ्यों को ऑडियो, एनीमेशन एवं संवादात्मक रूप में प्रस्तुत कर बच्चों के लिए अधिक आकर्षक और सहज बनाया जा सकता है। इस अवसर पर सुषमा सिंह की बाल कृतियाँ 'नन्हा पाखी' और 'कच्चा पापड़' सहित कई पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। इस दौरान वक्ताओं ने बदलते समय में बच्चों तक वैज्ञानिक सोच, तर्कशीलता और लोकतांत्रिक मूल्यों को पहुँचाने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही बाजारीकरण के प्रभाव के बीच मानवीय मूल्यों की रक्षा को भी महत्वपूर्ण बताया गया ।समापन सत्र में डॉ. विकास दवे ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

निजी स्कूलों की महंगी फीस, बड़े दावे और हकीकत

(विज्ञापनों में सफलता की गारंटी, लेकिन परिणामों में सच्चाई—क्या अभिभावकों को मिल रहा है उनके पैसे का सही मूल्य?)

- डॉ. सत्यवान सौरभ

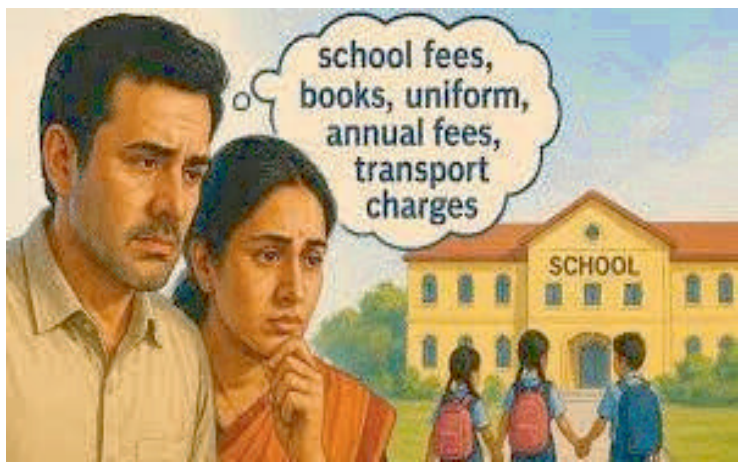

आज के दौर में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं रह गई है, बल्कि यह एक तेजी से बढ़ता हुआ व्यवसाय भी बन चुकी है। शहरों से लेकर छोटे कस्बों तक, निजी स्कूलों की संख्या लगातार बढ़ रही है और उनके साथ-साथ बढ़ रही है उनके प्रचार-प्रसार की रणनीतियाँ। अखबारों, होर्डिंग्स, सोशल मीडिया और यहां तक कि स्थानीय कार्यक्रमों में भी स्कूलों के आकर्षक विज्ञापन देखने को मिलते हैं। हर स्कूल अपने आप को "सर्वश्रेष्ठ", "भविष्य निर्माता" और "सफलता की गारंटी" देने वाला संस्थान बताता है। लेकिन असली सवाल यह है कि क्या ये दावे वास्तविकता से मेल खाते हैं, या फिर यह केवल अभिभावकों की उम्मीदों और भावनाओं का लाभ उठाने का एक तरीका है?

आज का अभिभावक पहले से कहीं अधिक जागरूक है, लेकिन साथ ही वह अपने बच्चों के भविष्य को लेकर उतना ही चिंतित भी है। वह चाहता है कि उसका बच्चा एक अच्छे स्कूल में पढ़े, बेहतर सुविधाएं प्राप्त करे और जीवन में आगे बढ़े। इसी सोच के चलते वह अक्सर अपनी आय से अधिक खर्च करने के लिए भी तैयार हो जाता है। कई परिवार ऐसे हैं जो अपनी जरूरतों में कटौती करके, कर्ज लेकर या अतिरिक्त काम करके बच्चों की फीस भरते हैं। उनके मन में यह विश्वास होता है कि महंगे स्कूल में पढ़ाई का मतलब है बेहतर शिक्षा और निश्चित सफलता।

निजी स्कूल इसी मनोविज्ञान को समझते हैं और अपने प्रचार में इसका भरपूर उपयोग करते हैं। वे अपने कैंपस, इंफ्रास्ट्रक्चर, स्मार्ट क्लासरूम, एयर-कंडीशंड सुविधाओं, खेल गतिविधियों और अन्य आधुनिक संसाधनों को प्रमुखता से दिखाते हैं। इसके साथ ही, वे प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे मेडिकल, इंजीनियरिंग, कानून और रक्षा सेवाओं में सफलता के बड़े-बड़े दावे भी करते हैं। कई बार विज्ञापनों में कुछ चुनिंदा छात्रों की उपलब्धियों को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है, जैसे वह पूरे स्कूल के स्तर को दर्शाती हों।

लेकिन जब हम इन दावों को गहराई से परखते हैं, तो एक अलग ही तस्वीर सामने आती है। वास्तविकता यह है कि प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता का प्रतिशत बहुत कम होता है। चाहे वह मेडिकल प्रवेश परीक्षा हो, इंजीनियरिंग की प्रतिष्ठित परीक्षाएं हों, या फिर कानून और रक्षा सेवाओं से जुड़ी परीक्षाएं—इनमें सफल होने वाले छात्रों की संख्या अक्सर सीमित होती है। कई बार तो पूरे साल में गिने-चुने छात्र ही इन परीक्षाओं को पास कर पाते हैं। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या स्कूल द्वारा किए गए दावे वास्तविकता के अनुरूप हैं?

यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि इन प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी केवल स्कूल की पढ़ाई के आधार पर संभव नहीं होती। अधिकतर छात्र अलग से कोचिंग संस्थानों का सहारा लेते हैं, जहां उन्हें विशेष रूप से इन परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाता है। वे अतिरिक्त समय, मेहनत और संसाधन लगाते हैं। ऐसे में यदि कोई स्कूल इन छात्रों की सफलता का पूरा श्रेय अपने ऊपर लेता है, तो यह अभिभावकों को गुमराह करने जैसा हो सकता है।

बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम भी किसी स्कूल की गुणवत्ता को मापने का एक प्रमुख आधार होते हैं। लेकिन यहां भी अक्सर देखा जाता है कि बहुत कम छात्र ही 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त कर पाते हैं। 95 प्रतिशत से ऊपर अंक लाने वाले छात्रों की संख्या तो और भी कम होती है। यदि कोई स्कूल खुद को क्षेत्र का अग्रणी संस्थान बताता है, तो उससे यह अपेक्षा की जाती है कि उसके परिणाम भी उसी स्तर के हों। लेकिन कई बार यह अपेक्षा पूरी नहीं हो पाती।

फीस का मुद्दा इस पूरे विषय का सबसे संवेदनशील पहलू है। निजी स्कूलों की फीस लगातार बढ़ती जा रही है, और कई मामलों में यह मध्यम वर्गीय परिवारों की आर्थिक क्षमता से बाहर हो जाती है। फीस के अलावा भी कई तरह के अतिरिक्त खर्च होते हैं—जैसे परिवहन शुल्क, यूनिफॉर्म, किताबें, वार्षिक शुल्क, गतिविधि शुल्क आदि। कुल मिलाकर, एक बच्चे की शिक्षा पर होने वाला खर्च काफी अधिक हो जाता है।

यहां यह समझना जरूरी है कि स्कूलों को अपने संचालन के लिए धन की आवश्यकता होती है। अच्छे शिक्षक, आधुनिक सुविधाएं, सुरक्षा व्यवस्था, और सह-पाठयक्रम गतिविधियां—इन सभी का एक खर्च होता है। लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है जब फीस और शिक्षा की गुणवत्ता के बीच संतुलन नहीं होता। यदि स्कूल अत्यधिक फीस ले रहा है, तो उससे यह अपेक्षा करना गलत नहीं है कि वह उसी स्तर की गुणवत्ता भी प्रदान करे।

सरकार ने इस समस्या को देखते हुए कई राज्यों में फीस नियंत्रण के लिए नियम और कानून बनाए हैं। फीस रेगुलेशन कमेटियां गठित की गई हैं, जिनका उद्देश्य स्कूलों द्वारा मनमानी फीस वृद्धि को रोकना है। लेकिन व्यवहार में इन नियमों का प्रभाव सीमित दिखाई देता है। कई बार अभिभावकों को अपने अधिकारों की जानकारी नहीं होती, और वे अकेले आवाज उठाने से हिचकिचाते हैं।

इस स्थिति में अभिभावकों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्हें केवल विज्ञापनों के आधार पर निर्णय लेने के बजाय स्कूल के वास्तविक प्रदर्शन, शिक्षकों की गुणवत्ता, और पिछले परिणामों का गंभीरता से विश्लेषण करना चाहिए। यदि संभव हो, तो अन्य अभिभावकों से बातचीत करनी चाहिए और उनके अनुभव जानने चाहिए। स्कूल के दावों और वास्तविकता के बीच अंतर को समझना आवश्यक है।

इसके अलावा, यदि अभिभावकों को लगता है कि स्कूल पारदर्शिता नहीं बरत रहा है या गलत दावे कर रहा है, तो उन्हें सामूहिक रूप से आवाज उठानी चाहिए। एकजुट होकर स्कूल प्रबंधन से जवाब मांगना, और आवश्यक होने पर संबंधित शिक्षा अधिकारियों या बोर्ड के पास शिकायत दर्ज कराना, एक प्रभावी कदम हो सकता है। इससे न केवल समस्या का समाधान हो सकता है, बल्कि भविष्य में ऐसी स्थितियों को रोका भी जा सकता है।

यह भी जरूरी है कि हम सफलता की परिभाषा को केवल अंकों और प्रतियोगी परीक्षाओं तक सीमित न रखें। हर बच्चा अलग होता है, उसकी रुचियां और क्षमताएं भी अलग होती हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल एक परीक्षा में सफलता दिलाना नहीं, बल्कि बच्चे के समग्र विकास को सुनिश्चित करना होना चाहिए। एक अच्छा स्कूल वही है जो बच्चे को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करे।

आज के समय में यह समझना बेहद जरूरी है कि कोई भी स्कूल सफलता की गारंटी नहीं दे सकता। स्कूल केवल एक मंच प्रदान करता है, जहां से बच्चा अपनी यात्रा शुरू करता है। उसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना मेहनत करता है, उसे कैसा मार्गदर्शन मिलता है, और उसका वातावरण कैसा है।

अंततः, शिक्षा को एक सेवा के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि केवल एक व्यापार के रूप में। स्कूलों की जिम्मेदारी है कि वे पारदर्शिता बनाए रखें, अपने दावों के प्रति जवाबदेह रहें, और अभिभावकों के विश्वास को बनाए रखें। वहीं, अभिभावकों की भी यह जिम्मेदारी है कि वे जागरूक रहें, सही जानकारी के आधार पर निर्णय लें, और आवश्यकता पड़ने पर अपनी आवाज उठाएं।

यदि इन दोनों पक्षों के बीच संतुलन और विश्वास बना रहता है, तभी हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं जो वास्तव में बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बना सके, न कि केवल एक महंगा सौदा बनकर रह जाए।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक हैं।)

कानपुर में मंगलसूत्र लूटने वाले दो बदमाश मुठभेड़ में गिरफ्तार, माल बरामद

सुनील बाजपेई

कानपुर। पुलिस की सक्रियता के बाद भी जिले में लूट की घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। इसके खिलाफ पुलिस भी लगातार बदमाशों पर अपना शिकंजा कसने की कोशिश में जुटी है ,जिसके फल स्वरुप ही उसने मंगलसूत्र लूटने वाले दो शातिर अपराधियों को मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार कर लिया। इनमें से गोली से घायल बदमाश को इलाज के लिए अस्पताल में भी भर्ती कराया गया है। अब पुलिस इनके फरार साथियों की भी तलाश कर रही है। यह घटना चकेरी थाना क्षेत्र की है

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के अनुसार महिला सिविल डिफेंस कर्मी अनीता श्रीवास्तव से बीते शनिवार को मंगलसूत्र लूट लिया गया था। इसके कुछ ही समय बाद आरोपितों ने एक अन्य युवती से भी पर्स लूट लिया था।

इसके बाद पुलिस दोनों बदमाशों की तलाश लगातार कर रही थी। इसी दौरान पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि दोनों आरोपी क्षेत्र में मौजूद हैं। जिस पर पुलिस ने सनिगवां स्थित अलकनंदा रेलवे ओवरब्रिज के पास उन्हें रोकने का प्रयास किया। इस दौरान बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग कर दी।

जवाबी कार्रवाई में एक आरोपी के पैर में गोली लगी, जबकि दूसरे को दौड़ाकर पकड़ लिया गया। पुलिस ने बताया कि मुठभेड़ में गिरफ्तार बदमाशों की पहचान एहतेशाम और रियान के रूप में हुई है। उनके पास से लूटा गया मंगलसूत्र और एक अवैध तमंचा भी बरामद किया गया है। घायल आरोपी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अब पुलिस इसके साथियों की भी तलाश कर रही है।

सोशल मीडिया की बनावटी चमक और हमारे मानसिक सुकून का पतन

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

आज के इस चकाचौंध भरे डिजिटल दौर में इंसान अपनी सच्ची ज़िंदगी जीने के बजाय दूसरों की बनावटी चमक-धमक वाली दुनिया का क़ैदी बन चुका है। सोशल मीडिया के रंगीन पर्दों पर हम रोज़ाना उन तस्वीरों और स्टोरीज़ का सिलसिला देखते हैं, जहाँ लोग अपनी ज़िंदगियों को आकर्षक और संतुष्ट दिखाने में मशगूल रहते हैं, लक्ज़री कारों में सवार मुस्कुराते चेहरे, विदेशी समुद्रतटों पर धूप में चमकते शरीर, या भव्य पार्टियों की चमचमाती फोटोज़। ये दृश्य अनजाने में हमें अपनी सादा और शांतिपूर्ण ज़िंदगी को बेहद फ़ीकी, बेरंग और बेकार नज़र आने पर मज़बूर कर देते हैं। लेकिन यह हक़ीक़त का सिर्फ़ एक पहलू है, जिसे बड़ी चालाकी और सलीक़े से पेश किया जाता है। क्या आपने कभी सोचा है कि कोई व्यक्ति अपनी असफ़लताओं को क्यों छिपाता है? अपनी बेबसी की उन रातों को क्यों पोस्ट नहीं करता, जब तन्हाई में आँखों से गरम आँसू लुढ़कते हैं? या उन संघर्षों को क्यों नज़रअंदाज़ कर देता है, जो उसके चेहरे पर झुर्रियाँ खींचते हैं? हक़ीक़त यह है कि सोशल मीडिया पर साझा होने वाली हर पोस्ट एक फ़िल्टर्ड कैनवास है, जहाँ सिर्फ़ ख़ुशियाँ और सफ़लताएँ चमकती हैं, वो हिस्सा जो दूसरों के दिल में ईर्ष्या पैदा करे। उदाहरण के तौर पर, कोई दोस्त इंस्टाग्राम पर अपनी शादी की भव्य तस्वीरें अपलोड करता है, लेकिन उसके पीछे की कर्ज़ की मार या पारिवारिक तनावों का ज़िक्र कहाँ? हम अपनी पूरी ज़िंदगी उसके उतार-चढ़ाव समेत का मुक़ाबला इन चंद 'हाइलाइटेड' लम्हों से करने लगते हैं। यही मुक़ाबला हमारे मानसिक सुकून के लिए एक ख़ामोश ज़हर बन जाता है, जो धीरे-धीरे हमारी आत्मविश्वास को चाट डालता है।

मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से भी यही साबित होता है। एक रिसर्च के मुताबिक, रोज़ाना सोशल मीडिया पर दो घंटे से ज़्यादा समय बिताने वाले युवाओं में डिप्रेशन और चिंता के मामले 27% तक बढ़ जाते हैं। क्यों? क्योंकि हमारी दिमाग़ी संरचना तुलना पर आधारित है। जब हम दूसरों की चमक को अपनी हक़ीक़त से तौलते हैं, तो एक हीन भावना जन्म ले लेती है। सोचिए, आपकी सादगी भरी शाम परिवार के साथ चाय की चुस्कियाँ लेना किसी स्टारबक्स कैफ़े की ग्लैमरस फ़ोटो के आगे फ़ीकी कैसे पड़ जाती है? हर चमकती चीज़ हक़ीक़त में वैसी सुनहरी नहीं होती, जैसी स्क्रीन पर नज़र आती है। अपनी ज़मीनी सच्चाइयों को किसी और के बनावटी दिखावे की तराज़ू में तौलना, दरअसल अपनी ख़ुशियों का गला घोंटने के बराबर है।

इसलिए, अगर हम वाक़ई आत्मिक और मानसिक शांति चाहते हैं, तो दूसरों के दिखावे से प्रभावित होना छोड़ना होगा। हमें अपनी ज़िंदगी के छोटे-छोटे आशीर्वादों की क़द्र करनी होगी सुबह की पहली किरण, बच्चों की हँसी, या शाम की शांतिपूर्ण सैर। सुकून की असली संपत्ति दूसरों की नज़रों में लोकप्रिय होने में नहीं, बल्कि अपनी सच्चाई के साथ संतुष्ट होकर जीने में छिपी है। इसके लिए व्यावहारिक क़दम उठाएँ, सोशल मीडिया का इस्तेमाल सीमित करें, 'डिटॉक्स' पीरियड रखें, और आदत डालें जहाँ अपनी उपलब्धियों को नोट करें। वरना यह बनावटी दुनिया हमें सिर्फ़ हसरतों और हीनभावना के सिवा कुछ नहीं देगी एक ख़ालीपन, जो हमारी रूह को खोखला कर देगा। आइए, आज से ही अपनी स्क्रीन को बंद करें और अपनी असली ज़िंदगी को गले लगाएँ। यही है सच्चा सुकून।

भारत फाइटर जेट्स बनेगा आत्मनिर्भर - डीआरडीओ की पहल

रामस्वरूप रावतसरे

भारत ने अब उस क्षेत्र में कदम रख दिया है जहाँ पहुँचना दुनिया के गिने-चुने देशों के लिए ही संभव हो पाया है और वो है जेट इंजन निर्माण। यह एक ऐसी तकनीक है जिसे रक्षा क्षेत्र का 'सबसे जटिल विज्ञान' माना जाता है और यही अब भारत के आत्मनिर्भर मिशन का नया केंद्र बनता जा रहा है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन यानी डीआरडीओ के तहत काम करने वाली गैस टर्बाइन रिसर्च एस्टैब्लिशमेंट (जीटीआरई) ने देश में 'नेशनल एयरो इंजन टेस्ट कॉम्प्लेक्स' स्थापित करने की दिशा में बड़ी पहल शुरू कर दी है। यह पहल सिर्फ एक इंफ्रा का प्रोजेक्ट नहीं है बल्कि भारत की सामरिक ताकत को नई ऊँचाइयों पर ले जाने की तैयारी है।

जानकारी के अनुसार जेट इंजन तकनीक पर आज तक कुछ ही देशों का दबदबा रहा है। ऐसे में भारत का इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में बढ़ना रक्षा क्षेत्र में एक ऐतिहासिक और निर्णायक बदलाव का संकेत माना जा रहा है। यह कदम न सिर्फ भारतीय वायुसेना की क्षमताओं को मजबूत करेगा बल्कि भविष्य में स्वदेशी लड़ाकू विमानों के विकास को भी नई गति देगा।

जेट इंजन बनाना किसी भी देश के लिए टेक्निकल सुप्रीमेसी की सबसे बड़ी कसौटी माना जाता है। यह सिर्फ एक मशीन नहीं बल्कि विज्ञान, इंजीनियरिंग और वर्षों के शोध का परिणाम होता है। यही कारण है कि दुनिया में केवल कुछ ही देश इस क्षेत्र में पूरी तरह सक्षम हैं। इनमें अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन शामिल हैं। भारत लंबे समय से इस विशिष्ट समूह में शामिल होने की कोशिश कर रहा है लेकिन उन्नत टेस्टिंग सुविधाओं की कमी इस राह में सबसे बड़ी चुनौती रही है। अब तक भारत ने कई प्रयास किए हैं। इनमें सबसे प्रमुख रहा 'कावेरी इंजन कार्यक्रम' जिसे स्वदेशी जेट इंजन विकसित करने की दिशा में एक बड़ी पहल माना गया था। हालाँकि, यह परियोजना अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर सकी। इसके पीछे कई तकनीकी चुनौतियाँ थीं लेकिन सबसे अहम कारण मजबूत और आधुनिक टेस्टिंग इंफ्रास्ट्रक्चर का अभाव ही था।

जानकारों का कहना है कि प्रस्तावित नेशनल एयरो इंजन टेस्ट कॉम्प्लेक्स भारत के लिए एक बड़ा 'गेम चेंजर' साबित हो सकता है। आसान शब्दों में समझें तो यह एक ऐसी जगह होगी जहाँ जेट इंजन के हर छोटे-बड़े हिस्से जैसे फैन, कंप्रेसर, कंबस्टर, टर्बाइन और आफ्टरबर्नर की जाँच और परीक्षण एक ही परिसर में किया जा सकेगा। अभी तक इन हिस्सों को अलग-अलग जगहों पर टेस्ट करना पड़ता था जिससे समय भी ज्यादा लगता था और प्रक्रिया भी मुश्किल हो जाती थी। इस कॉम्प्लेक्स के बनने के बाद पूरी टेस्टिंग एक ही जगह पर आसानी से हो सकेगी। सबसे खास बात यह है कि यहाँ जमीन पर ही आसमान जैसी परिस्थितियाँ बनाई जा सकेंगी। यानी इंजीनियर लैब में ही 40,000 फीट की ऊँचाई, ठंडा तापमान और कम हवा के दबाव जैसी स्थितियों को तैयार कर पाएँगे। इससे इंजन को असली उड़ान से पहले ही पूरी तरह जाँचा जा सकेगा जिससे टेस्टिंग ज्यादा सटीक, तेज और कम खर्चीली हो जाएगी।

इसे विदेशी निर्भरता से मुक्ति की दिशा में बड़ा कदम बताया जा रहा है। आज भारत के ज्यादातर आधुनिक फाइटर जेट जैसे तेजस, विदेशी इंजनों पर चलते हैं। यानी हमें इंजन के लिए दूसरे देशों खासकर अमेरिका की कंपनियों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह सहयोग अभी जरूरी है लेकिन इसमें कई दिक्कतें भी हैं। हमें पूरी तकनीक नहीं मिलती, इंजन में बदलाव या अपग्रेड करने की आजादी सीमित होती है और सप्लाई भी कभी-कभी अनिश्चित रहती है।

विशेषज्ञों के अनुसार अगर भविष्य में देशों के बीच तनाव बढ़ता है, तो हमें इंजन मिलने में दिक्कत आ सकती है और इसका असर सीधे हमारी सेना की ताकत पर पड़ेगा। इसीलिए अपना खुद का जेट इंजन बनाना बहुत जरूरी है। यह सिर्फ तकनीक की बात नहीं है बल्कि देश की सुरक्षा और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

भारत इस समय एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एएमसीए) जैसे आधुनिक फाइटर जेट पर काम कर रहा है। ऐसे विमानों के लिए बहुत ताकतवर, भरोसेमंद और आधुनिक जेट इंजन की जरूरत होती है। इसी दिशा में जीटीआरई एक स्वदेशी हाई-थ्रस्ट इंजन विकसित कर रहा है लेकिन किसी भी जेट इंजन को तैयार करने से पहले उसे हजारों घंटों तक कड़ी जाँच से गुजरना पड़ता है। नेशनल एयरो इंजन टेस्ट कॉम्प्लेक्स बनने के बाद यह पूरी प्रक्रिया तेज और आसान हो जाएगी जिससे भारत अपने फाइटर जेट प्रोजेक्ट्स में ज्यादा आत्मनिर्भर बन सकेगा।

आज के समय में जब दुनिया के कई हिस्सों में तनाव बढ़ रहा है भारत के लिए अपनी रक्षा क्षमता मजबूत करना बेहद जरूरी हो गया है। जेट इंजन जैसी अहम तकनीक में आत्मनिर्भरता भारत को और ताकतवर बनाएगी। आने वाले समय में जब भारत अपने खुद के इंजन से चलने वाले फाइटर जेट उड़ाएगा तो यह सिर्फ एक तकनीकी उपलब्धि नहीं होगी बल्कि आत्मनिर्भर भारत के सपने की एक बड़ी जीत होगी।

भारत का यह कदम जेट इंजन टेस्टिंग कॉम्प्लेक्स देश की रक्षा ताकत को नई ऊँचाई देगा, फाइटर जेट प्रोजेक्ट्स को तेज करेगा और भारत को उन चुनिंदा देशों की कतार में लाने में मदद करेगा जो अपने दम पर इतनी जटिल सैन्य तकनीक विकसित करते हैं।

(युवराज फीचर्स)

LPG संकट का असर,आहार केंद्र से एक घंटे में बर्तन खाली हो रहे हैं

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : भुवनेश्वर में गैस की दिक्कत बढ़ती जा रही है। रोज़ाना जितनी कमर्शियल गैस की ज़रूरत होती है, उसका हिस्सा मिलना मुश्किल हो रहा है। इसके अलावा, घरेलू गैस ब्लैक मार्केट में तीन गुना ज़्यादा दाम पर बिक रही है। कई हॉस्टल और कॉलेज मेस में खाना बनाना भी बंद हो गया है। होटल बंद हो गए हैं।कर्मचारियों को निकाल दिया गया है। और जो कुछ होटल हैं, उन्होंने अपने दाम बढ़ा दिए हैं। इस वजह से, अब मज़दूर और छात्र फ़ूड सेंटर्स की तरफ़ आ रहे हैं।

कुछ कॉलेजों को BMC सप्लाई डिपार्टमेंट गैस सप्लाई कर रहा है। लेकिन मेस में रहने वाले छात्रों को सबसे ज़्यादा परेशानी हो रही है। गैस की कमी की वजह से 5 kg के छोटे गैस कनस्तर भरना मुश्किल हो रहा है। इसलिए, अब छात्र फ़ूड सेंटर्स की तरफ़ आ रहे हैं। सिर्फ़ छात्र ही नहीं, बल्कि मज़दूर और दूसरे छोटे-मोटे काम करने वाले लोग भी अब सीधे फ़ूड सेंटर्स की तरफ़ आ रहे हैं। राजधानी में BMC के 14 फ़ूड सेंटर हैं। इन फ़ूड सेंटर्स पर हर दिन 9600 लोगों को खाना दिया जा रहा है। अब लोगों की संख्या बढ़ गई है। AIIMS, बरमूडा बस स्टैंड और दूसरी जगहों पर बने फ़ूड सेंटर्स पर भी लोगों की संख्या बढ़ गई है। जहाँ खाना हर दिन सुबह 11 बजे मिलता है, वहीं एक घंटे के अंदर दिया जा रहा है। हर फ़ूड सेंटर से हर दिन 200 से ज़्यादा लोग लौट रहे हैं।

रामनवमी के पहले टाटा में मॉडिफाइड साइलेंन्सरों पर पुलिस ने चलाया बुलडोजर

रामनवमी पर रांची व कोल्हान में पुलिस सतर्क

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

राचीं, पुलिस ने पहली बार एक कड़ा फैसला लेते हुए डेढ़ सौ से ज्यादा मॉडिफाइड साइलेंसर पर बुलडोजर चलाकर उसे नष्ट किया है. जमशेदपुर के सिटी एसपी ने बताया कि शहर में अब मॉडिफाइड साइलेंसर लगाकर गाड़ी चलाने वालों को चिन्हित किया जा रहा है. जबकि रामनवमी में इस बार लॉ एंड ऑर्डर बनाए रखने के लिए 1900 जवानों की तैनाती रहेगी.

जमशेदपुर पुलिस ने रामनवमी शांति और सौहार्द्रपूर्ण तरीके से मनाने को लेकर व्यापक तैयारी कर ली है. रामनवमी में शहर के चप्पे-चप्पे पर विधि व्यवस्था बनाए रखने के लिए व्यापक संख्या में जवानों की तैनाती रहेगी. वहीं जमशेदपुर पुलिस ने ट्रैफिक नियम का उल्लंघन करने वाले और बाइक में मॉडिफाइड साइलेंसर लगाकर उत्पात मचाने वालों पर पहली बार कड़ी कार्रवाई की है. शहर के अलग-अलग थाना क्षेत्र में चलाए गए अभियान के तहत जब्त किए गए साइलेंसर पर बुलडोजर चलाकर सख्त संदेश दिया गया है

जमशेदपुर पुलिस ने मॉडिफाइड साइलेंसर के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत अब तक कुल 150 से अधिक बाइकों के मॉडिफाइड साइलेंसर जब्त किए हैं. इन साइलेंसर को सार्वजनिक रूप से बुलडोजर से नष्ट किया गया, ताकि लोगों में कानून का डर बना रहे. बता दें कि शहर में लंबे समय से तेज आवाज वाले साइलेंसर लगाकर बाइक चलाने की शिकायत मिल रही थी. जिससे आम लोगों को परेशानी हो रही थी. सिटी एसपी कुमार शिवाशीष ने बताया है कि शहर में अब किसी भी हाल में मॉडिफाइड साइलेंसर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. साथ ही कहा कि यह अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा.

वहीं रामनवमी पर्व को लेकर जिला पुलिस ने व्यापक तैयारी की है. जिसके तहत जमशेदपुर सिटी एसपी ने सभी जवानों को खास निर्देश दिया है. पर्व को लेकर हर स्तर पर तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है. सिटी एसपी कुमार शिवाशीष ने साकची सीसीआर परिसर में जिले भर के जवानों और टाइगर मोबाइल बाइक पेट्रोलिंग टीम को विशेष ब्रीफिंग दी. इस दौरान उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया है कि सभी संवेदनशील और प्रमुख धार्मिक स्थलों पर गश्त बढ़ाई जाए. सिटी एसपी ने कहा कि रामनवमी के दौरान शहर के चप्पे-चप्पे पर जवानों की तैनाती रहेगी.शहर में सभी जुलूस अपने निर्धारित रूट से ही गुजरे, यह हर हाल में सुनिश्चित किया जाएगा. साथ ही जुलूस के समापन के बाद सभी श्रद्धालु सुरक्षित अपने घर तक पहुंचें, इस पर भी पुलिस की विशेष नजर रहेगी. उन्होंने साफ तौर पर चेतावनी दी कि किसी भी प्रकार का हुड़दंग या कानून-व्यवस्था बिगाड़ने की कोशिश बर्दाश्त नहीं की जाएगी. ऐसे तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी. इस दौरान सोशल मीडिया पर भी नजर रहेगी.

जिला रोजगार कार्यालय सिरसा से बड़ा है उपमंडल रोजगार कार्यालय हांसी

नई दिल्ली (नरेन्द्र रेड्डू)

युवा अधिकारिता एवं उद्यमिता विभाग, रोजगार निदेशालय हरियाणा के मंडल रोजगार कार्यालय हिसार के अंतर्गत आने वाले जिला रोजगार कार्यालय सिरसा एवं उपमंडल रोजगार कार्यालय हांसी का आज एक अजीबोगरीब मामला सामने आया है। जिला रोजगार अधिकारी श्रीमती कविता की सप्ताह में उपमंडल स्तर के कार्यालय कार्यालय हांसी में तो अस्थाई ड्यूटी तीन दिन (सोमवार, मंगलवार,बुधवार) की निर्धारित की गई है, विडम्बना देखिए जिला स्तर पर एक दिन (शुक्रवार) की स्थाई ड्यूटी निर्धारित है।

बाप से बड़ा भैया-

यह बात यहां पर बिल्कुल ही स्टीक बैठती है कि जिला रोजगार कार्यालय सिरसा से बड़ा उप मंडल रोजगार कार्यालय हांसी है, इसलिए जिला रोजगार अधिकारी की स्थाई ड्यूटी तो जिला रोजगार कार्यालय सिरसा में एक दिन और अपमान रोजगार कार्यालय हंसी में तीन दिन की निर्धारित की गई है जो कि यह सबसे बड़ी विडंबना है। ऐसे अधिकारियों को सहायक रोजगार अधिकारी के पद तक ही सीमित रहना चाहिए। उपमंडल स्तर के रोजगार कार्यालयों में केवल सहायक रोजगार अधिकारी शोभा देते हैं, जिला रोजगार अधिकारी का पद तो जिला स्तर के कार्यालय में ही शोभा देता है, यदि जिला रोजगार अधिकारी की उपमंडल रोजगार कार्यालय हांसी में सप्ताह में तीन दिन की अस्थाई ड्यूटी लगाई गई है तो यह अपने आप में आश्चर्यजनक है। जिला रोजगार अधिकारी को उपमंडल रोजगार कार्यालय हांसी में रहने का इतना ही शौक है तो उन्हें जिला रोजगार अधिकारी के पद से डिमोशन लेकर सहायक रोजगार अधिकारी का पद ज्वाइन कर लेना चाहिए।

वर्जन- जब इस बारे में मंडल रोजगार अधिकारी पंकज से बातचीत करने हेतु संपर्क किया गया तो उन्होंने फोन ही नहीं उठाया।

अमृतसर में 7 किलोग्राम हेरोइन सहित नशीले पदार्थों की तस्करी करने वाले मॉड्यूल से जुड़े दो व्यक्ति काबू

— जांच के अनुसार गिरफ्तार आरोपी हेरोइन की खेप की डिलीवरी में सक्रिय रूप से शामिल थे: डीजीपी गौरव यादव

— आगे की जांच जारी; और गिरफ्तारियां तथा बरामदगी की संभावना

चंडीगढ़/अमृतसर, 25 मार्च (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों के अनुसार पंजाब को नशा मुक्त राज्य बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के दौरान बड़ी सफलता हासिल करते हुए काउंटर इंटेलिजेंस (सीआई) अमृतसर ने नशीले पदार्थों की तस्करी करने वाले मॉड्यूल के दो सदस्यों को 7 किलोग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार कर इस मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है। यह जानकारी आज यहां पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान इंद्रजीत सिंह निवासी कलसियां खुर्द, तरनतारन और रविंदर शर्मा निवासी गुरबख्श नगर, नया कोट, अमृतसर के रूप में हुई है। नशीले पदार्थों की बरामदगी के अलावा पुलिस टीमों ने उनकी मारुति सुजुकी ब्रेजा कार (रजिस्ट्रेशन नंबर पी बी 39एल 7651) और एक मोटरसाइकिल हीरो पैशन (रजिस्ट्रेशन नंबर पीबी 02बी यू 2253), जिसका उपयोग खेप की डिलीवरी के लिए किया जाता था, को भी जब्त कर लिया है।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि गिरफ्तार आरोपी हेरोइन की खेप की ढुलाई में सक्रिय रूप से शामिल थे और संभवतः इस क्षेत्र में सक्रिय एक बड़े नशीले पदार्थों के नेटवर्क का हिस्सा हैं।

इस ऑपरेशन के बारे में जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि सीआई अमृतसर की पुलिस टीमों को विशेष सूचना मिली थी कि संदिग्ध इंद्रजीत सिंह और रविंदर शर्मा हेरोइन की एक बड़ी खेप की डिलीवरी के संबंध में अमृतसर में झब्बाल रोड, अड्डा बोहड़ू के पास दरिया के किनारे वाले रास्ते पर आने वाले हैं।

डीजीपी ने बताया कि तुरंत कार्रवाई करते हुए पुलिस टीमों ने इलाके के आसपास नाकाबंदी की और दोनों संदिग्धों को गिरफ्तार कर लिया। तलाशी के दौरान इंद्रजीत सिंह की कार की ड्राइवर सीट के नीचे से 4 किलोग्राम हेरोइन बरामद की गई, जबकि रविंदर शर्मा के पास से 3 किलोग्राम हेरोइन बरामद हुई।

इस मामले में आगे-पीछे के संबंधों को स्थापित करने के लिए जांच जारी है।

इस संबंध में एफआईआर नंबर 19 दिनांक 25-03-2026 को थाना स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल, अमृतसर में एनडीपीएस एक्ट की धारा 21, 25 और 29 के तहत दर्ज की गई है।

नन्हें शेर शावक नवरात्र में बिरसा जैविक उद्यान राँची पहुंचा

चार माह उम्र के एशियाई शेर शावक को दर्शक करेंगे दीदार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची भगवान बिरसा जैविक उद्यान राँची के निदेशक जब्बार सिंह ने बताया कि यहाँ एशियाई शेर के एक शावक का जन्म हुआ है। पूर्व में उद्यान में मौजूद एशियाई शेर एवं हाइब्रिड शेर वृद्धावस्था के कारण दिवंगत हो गए थे ,जिसके फलस्वरूप शेर का बाड़ा रिक्त हो गया था। उद्यान प्रबंध के विशेष प्रयासों के तहत छत्तीसगढ़ स्थित नंदनवन जू एंड जंगल सफ़ारी, रायपुर से एक जोड़ा एशियाई शेर नर ' अभय ' एवं मादा 'सबरी' को दिनांक 16 जून 2025 को पशु आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत भगवान बिरसा जैविक उद्यान राँची लाया गया। इसके पश्चात 12 अगस्त 2025 को दोनों का सफलतापूर्वक मिलन कराया गया।

जब्बार ने बताया कि दिनांक 28 नवंबर 2025 को मादा सबरी ने एक मादा शावक को जन्म दिया जन्म के लगभग 10 दिनों के बाद शावक अस्वस्थ हो गई थी और उसकी स्थिति गंभीर हो गई थी ,जिसके कारण शावक को उसकी माँ से अलग कर जन्तु अस्पताल के एक कक्ष में विशेष व्यवस्था करते हुए लालन -पालन किया गया।

उद्यान के सहायक वन संरक्षक, पशु चिकित्सक,वन क्षेत्र पदाधिकारी, जीव वैज्ञानिक ,वन रक्षियों एवं अन्य कर्मियों के सतत प्रयासों के फलस्वरूप अब शावक स्वस्थ है तथा लगभग 4 माह की हो चुकी है चूंकि अब शावक धीरे धीरे बड़ी हो रही है। अतः उसे उसकी माता सबरी के निकट स्थित नर्सरी में रखा जा रहा है जहाँ उसकी निरंतर निगरानी एवं देखभाल की जाएगी।

दर्शकों को नन्हें शावक के दीदार के लिए एक टीवी की व्यवस्था की गई है जिसमें सीसीटीवी के माध्यम से नन्हें शावक को दिखाया जाएगा। जिससे दर्शक शावक का दीदार कर सकेंगे।

इस अवसर पर संजीव कुमार प्रधान मुख्य वन संरक्षक, एचओएफएफ सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

पूर्वी सिंहभूम में दुसरे विश्वयुद्ध समय के अमेरिकी बमों को भारतीय सेना ने किया निष्क्रीय

तब चाकुलिया ऐयरबेश महत्वपूर्ण हुआ करता था

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिले के बहरागोड़ा में स्वर्णरेखा नदी के किनारे (पानीपाड़ा/नागुड़साई) मिले द्वितीय विश्वयुद्ध के समय के 227 किलो के भारी-भरकम जिंदा बमों को भारतीय सेना ने बुधवार दोपहर को सफलतापूर्वक डिफ्यूज कर दिया है। रांची से आई आर्मी की 51 इंजीनियर रेजीमेंट की बम निरोधक टीम ने इस ऑपरेशन को अंजाम दिया।इस विशेष अभियान का नेतृत्व लेफ्टिनेंट कर्नल धर्मेंद्र सिंह और कैप्टन आयुष कुमार सिंह की टीम ने किया।ऑपरेशन से पहले 1 किलोमीटर के दायरे को सील कर दिया गया था और ग्रामीणों को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया गया था। इस विशेष अभियान का नेतृत्व लेफ्टिनेंट कर्नल धर्मेंद्र सिंह और कैप्टन आयुष कुमार सिंह की टीम ने किया।ऑपरेशन से पहले 1 किलोमीटर के दायरे को सील कर दिया गया था और ग्रामीणों को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया गया था।

झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिले में स्थित चाकुलिया ऐयरबेश द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी वायु सेना का एक महत्वपूर्ण रणनीतिक ठिकाना था। 1940 के दशक में, मित्र राष्ट्रों द्वारा जापानी सेना के खिलाफ हवाई हमले करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता था।इस अड्डे से बी-24 लिबरेटर और अन्य भारी बमवर्षक विमान उड़ान भरते थे, जो बर्मा और चीन के मोर्चों पर बमबारी करते थे। यह दक्षिण-पूर्व एशिया में सबसे बड़े एयरबेस में से एक था, जिसमें भूमिगत (underground) हैंगर व रनवे थी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023